श्रीमाधव-तिथि

[श्रीएकादशीका शास्त्रीय एवं वैज्ञानिक माहात्म्य]

श्रीभक्तिप्रज्ञान गौड़ीय वेदान्त विद्यापीठ प्रकाशन

श्रीचैतन्य महाप्रभु, श्रीनित्यानंद प्रभु, श्रीअद्वैत आचार्य, श्रीगदाधर पण्डित, श्रीवास प्रभु और गौरभक्तवृन्द
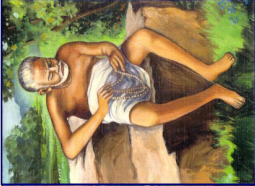
श्रील जगन्नाथ दास बाबाजी महाराज

श्रील भक्तिविनोद ठाकुर
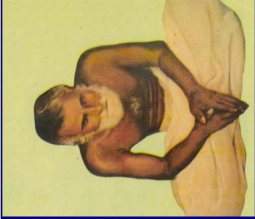
श्रील गौरकिशोरदास बाबाजी महाराज

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर प्रभुपाद

श्रीश्रीमद् भक्तिरक्षक श्रीधर गोस्वामी महाराज

श्रीश्रीमद् भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराज

श्रीश्रीमद् भक्तिप्रमोद पुरी गोस्वामी महाराज

श्रीश्रीमद् भक्तिवेदान्त स्वामी महाराज

श्रीश्रीमद् भक्तिवेदान्त वामन गोस्वामी महाराज

श्रीश्रीमद् भक्तिवेदान्त त्रिविक्रम गोस्वामी महाराज

श्रीश्रीमद् भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराज

हरि-नाम-माहात्म्य शिक्षा-गुरू श्रीश्रीमद् अनिरुद्ध प्रभु

श्रीश्रीमद् गौर-गोविन्द स्वामी महाराज

श्री ब्रह्म-माध्व-गौड़ीय वैष्णव गुरु-परम्परा

श्रीश्रीगुरु-गौराङ्गौ जयतः

श्रीमाधव-तिथि

[श्रीएकादशीका शास्त्रीय एवं वैज्ञानिक माहात्म्य]

हरिकथा तथा प्रेरणा स्रोत

नित्यलीला प्रविष्ट ॐ विष्णुपाद परमहंसस्वामी

श्रीश्रीमद्भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराजजी के

अनुगृहीत

त्रिदण्डिस्वामी

श्रीश्रीमद्भक्ति वेदान्त नारायण गोस्वामी महाराज

प्रकाशक– त्रिदण्डिस्वामी भक्तिवेदान्त दण्डी महाराज

प्रथम हिन्दी संस्करण– श्रीहरिशयन, शयन एकादशी , वामन (आषाढ़) मास,
श्रीगौराब्द: 530, खृष्टाब्द: 2o16

प्राप्तिस्थान

- श्रीरंगनाथ गौड़ीय मठ, गाडेवाडी, पोस्ट: बोरीबेल, तहसील: दौंड, जिला: पुणे, महाराष्ट्र. दूरवाणी: 9850519904, 9766330203, 7829378386. Email: vishnudaivata@gmail.com.
- श्री रंगनाथ गौड़ीय मठ, हेसरकट्टा, बंगलौर, कर्णाटक. पिन: 560088. दूरवाणी: (080) 28466760, 9379447895, 8095240387. Email: bvdandi@gmail.com
- श्री. भरत खैरे, 1333 रविवार पेठ, तहसील: वाई, जिला: सातारा, महाराष्ट्र. पिन: 412803. दूरवाणी: 9881469759.
- श्री. मुकुन्द दास (श्री. राजनन्दन शिंदे), जिला: सातारा. दूरवाणी:9881252581. Email: rajnandanonline@gmail.com
- श्री. अमलकृष्ण दास (श्री. अशोक विलास गायकवाड़), द्वारा: गायकवाड़ मंडप कांट्रैक्टर, मोहन नगर, चिंचवड, पुणे, महाराष्ट्र. पिन: 411019. दूरवाणी: 8856870440.
- श्री. अमलकृष्ण दास (श्री. अमोल बनकर), 105 न्यू कस्तूरी अपार्टमैंट, पांचाल नगर, निल्लीमोरे, नालासोपारा (पश्चिम), तहसील: वसई, जिला: पालघर, महाराष्ट्र. पिन: 401203. दूरवाणी: 8605635566. Email: bankaramol2012@gmail.com.
- श्री अमलकृष्ण दास(श्री अमरनाथ सिंग), फ्लैट 101, लक्ष्मी ऐनक्लेव बिल्डिंग, शहाजी राजे रोड, विलेपार्ले, मुंबई, महाराष्ट्र. पिन: 400057. दूरवाणी: 9967514257.
- श्रीबालाजी गौड़ीय मठ, श्रीगजानन-श्रीश्रीराधामदनमोहन मंदिर, 3-143, शासकीय पाठशाला के निकट, सत्यनारायण पूरम् सर्कल, तिरूपति,आंध्र प्रदेश. पिन: 517501. दूरवाणी: 801943668 . Email: selams9@yahoo.com.
- श्री गौर नारायण गौड़ीय मठ, आर्. एच्. कॉलोनी-3, तहसील: सिन्धनुर, जिला: रायचूर. पिन: 584143 (कर्नाटक) दूरवाणी: 7676308925, 9019265296
- श्री श्री राधा गोविन्द गौड़ीय वेदान्त ट्रस्ट, द्वारा एकाउंटस् केअर, रामबाग कॉलोनी, तहसील: बड़ौत, जिला: बागपत, उत्तर प्रदेश. पिन: 250611. श्री नवीन कृष्ण दास, दूरवाणी: 9760199995, श्री बलराम दास, दूरवाणी: 9358808108, श्री प्रेम कृष्ण दास, दूरवाणी: 9412522945.

वेबसाईट: (1) http://www.purebhakti.com (2) http://www.purebhakti.tv (3) http://www.bhaktiprojects.org/project/sri-ranganatha-gaudiya-matha-gurukula/ (4) http://www.sreeranganathgaudiya.org

मुद्रक : श्री. राजकुमार सोपानराव मस्कर (बी.ए. बी. एड्.), ओंकार ऑफसेट, "संकल्प", पुणे सोलापूर रोड, भिगवण, तहसील: इंदापूर, जि: पुणे. 413130. मो: 9860337001.

मुखपृष्ठपर विराजित श्रीपंचतत्त्व के चित्र को श्रीमती बकुला दासी ने प्रस्तुत किया हैं ।

विषयसूची

विश्व प्रसिद्ध जगद्गुरु युगाचार्य नित्यलीला प्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशत श्री श्रीमद् भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराज

आप एक रसिक आचार्य हैं। आपने अपनी पुलिस विभाग की अच्छी खांसी नौकरी त्याग कर पूरे वैराग्य के साथ युवा अवस्था में ही भगवद्-भजन आरंभ किया। आप भगवान श्रीकृष्ण के नित्य परिकर हैं। आप इस जगत में केवल शुद्ध-भक्ति का प्रचार करने अवतरित हुए हैं। आपने सारे विश्व की चालीस प्रदक्षिणा करते हुए पृथ्वी के कोने कोने में श्री चैतन्य महाप्रभु की वाणी का प्रचार किया। आप ने गोस्वामी-वर्ग और प्राचीन आचार्यों के अमूल्य ग्रंथों का हिन्दी भाषा में प्रकाशित करके सभी भक्तों के उपर परम उपकार किया हैं। आप के सभी ग्रंथों का अनुवाद अभी अंग्रेज़ी, रूसी, जर्मन, चाइनीज़, कन्नड़, तेलुगु, तमिल, मराठी आदि देश-विदेश की भाषाओं में हो रहा हैं। आपने विश्व प्रसिद्ध जगद्गुरु नित्यलीला प्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशत श्री श्रीमद् भक्तिवेदान्त स्वामी महाराज की सन् 1947 ई. से प्रचुर सेवा की। उन्होंने आपको विदेश से 300 से अधिक खत लिखे और आप के सेवा-वृत्ति की बहुत प्रशंसा की। आपने ही अपने हस्त कमलों से उन्हें समाधि प्रदान की।

नित्यलीला प्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशत श्री श्रीमद् भक्तिवेदान्त वामन गोस्वामी महाराज

आपने परमाराध्यतम जगद्गुरु ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशत-श्रीश्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती 'प्रभुपाद' से हरिनाम और परम गुरुदेव परमाराध्यतम जगद्गुरु ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशत-श्रीश्रील भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराजजी से ब्राह्मण-दीक्षा और संन्यास प्राप्त किया। संन्यास के पहले आप श्री सज्जन सेवक ब्रह्मचारी के नाम से विख्यात थे। एक बार आपका शरीर 104 डिग्री बुखार से तप रहा था। श्रील परम-गुरुदेव ने आप को वैष्णवों के लिये रसोई बनाने की आज्ञा दी। आपने उसी अवस्था में उठ कर रसोई बनाई और ठाकुर जी भोग निवेदन कर, सब वैष्णवों की प्रसाद-सेवा की। आपकी गुरु-निष्ठा की कोई सीमा नहीं हैं । कभी हरि-कथा परिवेषण करते करते जब श्रील परम-गुरुदेव कोई श्लोक भूल जाते तो आप वह श्लोक उनको याद दिलाते थे। एक बार आसाम प्रचार में "श्री चैतन्य महाप्रभु को 'भगवान' करके क्यों संबोधित करते हों?" – ऐसा प्रश्न श्रील परम गुरुदेव को किया गया। श्रील परम-गुरुदेव की आज्ञा से आपने उसी समय विभिन्न शास्त्रों से पचास श्लोक उद्धृत किये और वहाँ के लोगों के संदेह का निरसन किया। श्रील परम गुरुदेव ने बाँग्ला भाषा में प्रकाशित होने वाली श्री गौड़ीय पत्रिका का संपादन और प्रकाशन दायित्व आपके उपर दिया था। आपका स्वभाव गंभीर और शांत था।

एकादशी उपवास की आवश्यकता

हमारे देश में सामान्यतः सब लोग उपवास करते हैं। सप्ताह के कौन-कौन से दिन उपवास या व्रत रखते है और उस के द्वारा विविध देवताओंको प्रसन्न करने की इच्छा होती है। इस व्रत के पीछे कोई तो उद्देश्य निश्चित ही होता है। साधारणतः धन प्राप्ति के हेतु, बीमारी से ठीक होने के लिए, राजनीति में पद के लिए, अच्छी नौकरी, पत्नी या पति प्राप्ति के लिए लोग उपवास करते है। भौतिक इच्छा प्राप्ति के लिए उपवास करने से बहुत बार फल मिलता है। पर यह फल भौतिक होने से सिर्फ क्षणिक होता है। ऐसे व्रत करना मतलब भगवानसे किया हुआ सौदा ही है। हमारी इच्छा पूरी होते ही व्रत समाप्त करके हम भूल जाते है। 'जरूरत खत्म होते ही वैद्य की गुंजाइश नहीं रहती!' श्रील भक्तिवेदान्त स्वामी महाराज ऐसे अनुष्ठानोंको 'भौतिक धर्म' कहते थे।

भगवान् श्रीकृष्ण के भक्त भी एकादशी, जन्माष्टमी, रामनवमी, गौर पूर्णिमा, नृसिंह चतुर्दशी, व्यासपूजा या और अन्य वैष्णव तिथियोंकों उपवास करते है, व्रत रखते है। इसके पीछे उनका क्या उद्देश्य होता है? वस्तुतः भक्तोंकी कोई भी भौतिक कामना नहीं होती। भक्त अपनी आध्यात्मिक उन्नति के लिए यह व्रत करते है। व्रत का पालन करना यह मूल सिद्धांत न होकर, भगवान् के प्रति अपनी श्रद्धा बढाना यह कारण है। उपवास करनेसे मन शुद्ध होता है, मन को वश करता है। मन को वश में करके भगवान श्रीकृष्ण की सेवा उत्तम प्रकारसे करने के लिए उपवास सहायक होता है।

एकादशी के दिन अन्न का त्याग करके, शरीरकी आवश्यकताएँ कम करके श्रवण-कीर्तन के द्वारा भगवान् की अधिक से अधिक सेवा करना यही उपवास का उद्देश्य है। इससे भगवान संतुष्ट होते है। भारत में अनादि कालसे एकादशी के व्रत का पालन किया जाता है। लेकिन आज लोगोंकी अध्यात्म के प्रति कोई रूचि नहीं है। अगर कोई एकादशी व्रत रखना चाहता है तो घरके लोग नाराज होते है। एकादशी व्रत का पालन बड़े-बुज़ुर्ग लोगोंको करना है, जवानोंको तो खा-पीकर मौज करनी चाहिए। ऐसा उपदेश दिया जाता है। श्रील भक्तिवेदान्त स्वामी महाराज एकादशी तथा अन्य उत्सवों के वक्त व्रत रखनेको आध्यात्मिक जीवनका महत्त्वपूर्ण अंग मानते है। वे कहते है, "यह सभी विधि-विधान हमारे महान आचार्योंनें उन लोगों के लिए बनाए है जो दिव्य जगत् में

भगवानका संग पाने के इच्छुक है। महात्मागण इन सभी विधि-विधानों को मानते है, इसलिए उन्हें फल मिलता है।"

श्रील व्यासदेवजीने पुराणोंमें अनेक स्थानोंपर एकादशीव्रत का माहात्म्य वर्णन किया है। इस पुस्तक में अपरा एकादशी माहात्म्य का वर्णन कथारूप में किया गया है। कथा पढ़ने के बाद किसीको ऐसा प्रतीत हो कि इस पालन से भौतिक लाभ होता है, इसलिए यह व्रत केवल भौतिक लाभ हेतु हो। किंतु वैसा नहीं है, जो वैष्णव है, उनके लिए यह सर्वश्रेष्ठ व्रत है। एकादशी भगवान् श्रीकृष्ण को अत्यंत प्रिय है, इसलिए उसको हरिवासर कहते है। उपवास शब्द का अर्थ है पास रहना। हमें अगर भगवान के निकट रहना है, तो उपवास करना आवश्यक है। इसीलिए एकादशी के दिन सभी भौतिक इंद्रियतृप्ति के कार्यों से दूर रहकर भगवान के नामस्मरण में अधिक-से-अधिक समय बिताना चाहिए। ब्रह्म वैवर्त पुराणमें कहा गया है कि–

उपावृत्तस्य पापेभ्यो यस्तु वासो गुणैः सह।
उपवासः स विज्ञेयः सर्व भोग विवर्जितः।।

उपवास का मतलब सभी पापोंसे और इंद्रियतृप्ति के कार्योंसे दूर रहना। निश्चित ही एकादशी व्रत के पालन से धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इनकी प्राप्ति तो होती है, पर उसके साथ पंचम पुरूषार्थ भगवद्भक्ति अथवा कृष्णप्रेम भी प्राप्त होता है। श्री हरिभक्ति विलास नामक ग्रंथमें बताया गया है कि,

एकादशी व्रतं नाम सर्व काम फल प्रदम्।
कर्त्तव्यं सर्वदा विप्रैः विष्णु प्रीणनकारणम्।।

भगवान् श्रीविष्णु की प्रसन्नता के लिए ब्राह्मणोंको एकादशी व्रतका पालन करना चाहिए। यह उनका कर्त्तव्य है। इसीलिए हर एक व्यक्तिको भगवान् की प्रसन्नता के लिए इस व्रतका पालन करना चाहिए। भगवान श्रीविष्णु के प्रसन्न होनेसे सुख और समृद्धि अपने आप प्राप्त होती है। ॐ विष्णुपाद नित्यलीला प्रविष्ट सच्चिदानन्द भक्तिविनोद ठाकुर अपने एक गीत में लिखते है,

माधव तिथी भक्ति जननी यतने पालन करी।

माधव तिथि अर्थात एकादशी व्रत, भक्तिजननी का मतलब हमारे हृदयमें भक्ति को

जन्म करानेवाली है। इसलिए वे कहते है कि, हमें प्रयत्नपूर्वक उसका पालन करना चाहिए। संत शिरोमणि श्री तुकाराम महाराज कहते है,

ज्यासी नावडे एकादशी। तो जिताची नरकवासी॥
ज्यासी नावडे हे व्रत। त्यासी नरक तोहि भीत॥
ज्यासी घडे एकादशी। जाणे लागे विष्णुपाशी॥
तुका म्हणे पुण्यराशी। तोचि करी एकादशी॥

जिसे यह एकादशी अच्छी नहीं लगती, वो जीते जी नरक में रहनेवाला व्यक्ति है। जिसे यह व्रत पसंद नहीं उससे नरक भी डरते है। क्योंकि वह व्यक्ति महापापी माना जाता है। जो एकादशी व्रतका पालन करता है, उसे निश्चित वैकुंठ प्राप्ति होती है। इसीलिए तुकाराम महाराज कहते है जिसने पूर्वजन्मोंमें पुण्यों की राशियां इकठ्ठी की है, वे ही केवल एकादशी व्रतका पालन करते है।

भगवान श्रीविठ्ठल के श्रेष्ठ-भक्त श्रीतुकाराम महाराज. आपके भावपुर्ण एवं भक्तिमय अभंग (मराठी पद्य) एवं दिव्य चरित्र ने महाराष्ट्र ही नहीं बल्कि देश-विदेश के अनगिनत सुकृतीवान लोगों को भक्ति मार्ग के प्रति आकृष्ट किया। आप की एकादशी के प्रति की निष्ठा प्रेरणादायक हैं। एकादशी के दिन आप निराहार रहकर और जल का भी त्याग कर के रात-दिन हरिनाम संकीर्तन में खोये रहते थे।

श्री एकनाथ महाराज (श्री जनार्दन महाराज के शिष्य) कहते है –

एकादशी , एकादशी। जया छंद अहर्निशी
व्रत करी जो नेमाने। तेथे वैकुंठाचे पणे
नामस्मरण जाग्रण। वाचे गाय नारायण
तोचि भक्त सत्य याचा। एका जनार्दन म्हणे वाचा।

जो भक्त को रात-दिन एकादशी तिथि के बारे में सोचता है और नित्य नियम के साथ एकादशी पालन करता हैं, वह अवश्य वैकुंठ जायेगा। जो भक्त एकादशी के दिन जागरण करते हुए भगवान श्रीहरि के नामों का स्मरण करता हैं, उन पवित्र नामों का गायन करता हैं, वह भगवान का सच्चा भक्त हैं।

एकादशी को अन्नग्रहण करनेसे क्या होता है इसका वर्णन तुकाराम महाराज इस प्रकार करते है,

एकादशीस अन्न पान। जे नर करिती भोजन ।
श्वानविष्ठेसमान। अधम जन तो एक॥
ऐका व्रताचें महिमान। नेमें आचरती जन ।
गाती ऐकती हरिकिर्तन। ते समान विष्णूशी॥
अशुद्ध विटालशींचे खळ । विडा भक्षिती तांबूल।
सांपडे सबळ। काळाहातीं न सुटे॥
शेज बाज विलास भोग । करि कामिनीशीं संग ।
तया जोडे क्षयरोग। जन्मव्याधी बळिवंत॥
आपण न वजे हरिकिर्तन। आणिकां वारी जातां जन।
त्याच्या पापा जाणा। ठेंगणा महामेरु तो॥
तया दंडी यमदूत। झाले तयाचे अंकित।
तुका म्हणे व्रत। एकादशी चुकलीया॥

जो लोग एकादशी को अन्नग्रहण करते है, भोजन करते है वह बहुत ही पतित जीव है। उन्हें अधम माना जाता है, क्योंकि वे जो भोजन करते है वह श्वान की विष्ठा जैसा

होता है। जो यह व्रत नहीं करता, उसके लिए यमदूत हैं ही, वो नरकगामी बनता है। जो मनुष्य एकादशी को तांबूल (पान) खाता हैं, उसे स्त्री के मासिक स्राव में बहने वाले अशुद्ध खून पान करने का पाप लगता हैं। जो मनुष्य एकादशी के दिन स्त्री-संग करता हैं, उसे क्षय रोग होता हैं। उसे आजीवन रोग सताते ही रहेंगे। एकादशी के दिन पापपुरुष अन्न में वास करता है, इसलिए अन्नग्रहण नहीं करना चाहिए।

तुका म्हणे बरे व्रत एकादशी। केले उपवासी जागरण॥

तुकाराम महाराज कहते हैं की एकादशी का उपवास और जागरण आत्मा के लिए परम उपादेय है।

पद्मपुराणमें ऐसा बताया है कि–

अश्वेमेधसहस्राणि राजसूयशतानि च ।
एकादश्युपवासस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम् ।।

सहस्र अश्वमेध यज्ञ आणि सेकडो राजसूय यज्ञ इनको एकादशीके उपवासकी सोलवी कला अर्थात् 6 प्रतिशत इतना भी महत्त्व नही है।

स्वर्गमोक्षप्रदा ह्येषा शरीरारोग्यदायिनी ।
सुकलत्रप्रदा ह्येषा जीवत्पुत्रप्रदायिनी ।
न गंगा न गया भूप न काशी न च पुष्करम् ।
न चापि वैष्णवं क्षेत्रं तुल्यं हरिदिनेन च ।

अर्थ–एकादशी ये स्वर्ग, मोक्ष, आरोग्य, अच्छी पत्नी और अच्छा पुत्र प्रदान करती हैं। गंगा, गया, काशी, पुष्कर, वैष्णव क्षेत्र इनमें से कोई भी एकादशी की बराबरी नहीं कर सकता है।

जिसे अपना हित करना हो उसे निम्नलिखित अन्न का एकादशी के दिन त्याग करना चाहिए।

1) चावल, तथा उससे बने पदार्थ, 2) गेहूँ, ज्वार, मक्का इनसे बने हुए पदार्थ, 3) दाल-मूँग, मसूर, तुहर, चना, मटर इत्यादि, 4) जौं, 5) राई और तिलका तेल.

भूलसे भी इन पदार्थों का सेवन नहीं करना चाहिए।अन्यथा व्रत भंग होता है। भक्ति में प्रगति करने के इच्छुक व्यक्ति को इनका पालन करना चाहिए। एकही दिन दो तिथि

(दशमी और एकादशी आती हो तो वैष्णव उस दिन का व्रत अथवा उत्सव दूसरे दिन करते है। इसलिए हम स्मार्त और भागवत यह दो एकादशी देखते हैं। हरिभक्तिविलास इस ग्रंथ में कहा गया है, हे ब्राह्मण, सूर्योदय से पूर्व 96 मिनट के पहले एकादशी शुरू होती है उस एकादशी को शुद्ध एकादशी कहना चाहिए। गृहस्थोंको इस एकादशी का पालन करना चाहिए। एकादशी करनेवाले या करने की इच्छा होनेवाले हर एक व्यक्तिको इस ग्रंथ को ध्यानपूर्वक पढना चाहिए।

–त्रिदण्डि स्वामी भक्तिवेदान्त दंडी महाराज

श्रीपाद भक्तिवेदान्त दंडी स्वामी महाराज, B.Sc. (Hons), B.E. (IISc, बंगलौर), M.S. (IIT. मद्रास), D.Sc. (वाशिंग्टन विश्वविद्यालय , अमेरिका), C.I.S.S,P., P.E., NASA – भूतपूर्व संगणक सुरक्षा वैज्ञानिक, भूतपूर्व अधिवक्ता – सिटी यूनिवर्सिटी ऑफ न्यूयार्क. Holder of many research patents in USA

आप जगद्गुरु युगाचार्य नित्यलीला प्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशत श्री श्रीमद् भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराज के शिष्य हैं।आप ने अमेरिका, सिंगापुर, मलेशिया, दक्षिण अफ्रिका, केनिया, त्रिनिदाद, तायवान, ब्राज़िल आदि देशों में शुद्ध भक्ति का प्रचार किया हैं । आप ने शाकाहार के बारे में अंग्रेज़ी भाषा में एक ग्रंथ लिखा हैं – “Vegetarianism- a scientifically proven and time honored path to peace” । श्रील गुरुदेव के आदेश से श्रीरंगनाथ गौड़ीय मठ, हेसरकट्टा, बंगलौर ने कन्नड़ भाषा में श्रीवैष्णव-सिद्धान्त-माला, श्रीमाधुर्य-कादंबिनी, श्रीजैवधर्म, श्रीचैतन्य महाप्रभु के स्वयं-भगवत्ता-प्रतिपादक कतिपय शास्त्रीय-प्रमाण आदि ग्रंथों को प्रकाशित किया हैं।श्रील गुरुदेव के ग्रंथों का मराठी, तेलुगु, तमिल और मलयालम भाषा में भी प्रकाशन हो रहा हैं।

निवेदन

(श्री एकादशी-व्रतकथा ग्रंथ में प्रकाशित)

श्रीगौडीय वेदान्त समिति से श्रीएकादशी-व्रतकथा-नामक ग्रन्थ सप्तम संस्करण के रूप में प्रकाशित हुआ हैं। विभिन्न पुराणों एवं वैष्णव-स्मृतिराज श्रीहरिभक्तिविलास आदि ग्रन्थों से यह संकलित हुआ हैं। श्री गौडीय वेदान्त समिति से प्रकाशित 'श्रीचैतन्य पंजिका' के पुनःप्रवर्त्तक नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री श्रीमद् भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराज जी ने स्व-लिखित भूमिकाओं में, श्रीचैतन्य-पंजिका के आदर्श-स्वरूप–जगद्‌गुरु श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी प्रभुपाद जी की विचारधारा से संवलित "गौड़ीयेर कृत्य" (भागवत धर्म) शीर्षक से उनके स्व-हस्त-लिखित कुछेक उपदेश मुद्रित किये हैं। उसमें संख्यापूर्वक नाम ग्रहण सहित 'एकादशी' आदि हरिवासर व्रत पालन' के संबंध में विशेष निर्देश प्रदत्त हुआ है। चौसठ प्रकार के भक्त्यांगों मे भी एकादशी व्रत पालन का विषय उल्लिखित हुआ है। अतः भक्ति लाभ करने के लिए सभी लोगों के द्वारा इस एकादशी या हरिव्रत पालन का नित्यत्व और उपयोगिता स्वीकृत हुई है।

पुराण आदि में उल्लिखित हुआ हैं कि,–परमवल्लभा एकादशी तिथि मनुष्य मात्र के लिए ही सर्वाभीष्ट प्रदायिनी है। क्या शुक्ला, क्या कृष्णा, दोनों पक्षों की ही एकादशी तिथि के दिन पूजा-महोत्सव आदि अनुष्ठान करना कर्त्तव्य है। इस व्रत का पालन करने से सभी पाप-ध्वंस, सर्वार्थ-प्राप्ति और श्रीकृष्ण का प्रीतिविधान होता है। भगवान का प्रीतिविधान, विधि-प्राप्तत्व, भोजन की निषिद्धता और व्रत न करने के कारण दोष–इन चार कारणों से उक्त व्रत का नित्यत्व प्रसिद्ध है। एकादशी का व्रत श्रीहरि को सबसे अधिक प्रिय है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, नारी-पुरुष जो भी भक्तिपूर्वक एकादशी व्रत पालन करेंगे, वे मोक्ष और भगवत्-सान्निध्य प्राप्त कर सकते हैं।

सभी के लिए एकादशी में उपवासी रहकर उक्त व्रत पालन करना अति आवश्यक है। उपवास-फलेच्छु व्यक्ति एक दिन पहले रात्रि भोजन, उपवास के दूसरे दिन रात्रि

भोजन[1] एवं उपवास के दिन और रात में भोजन को परित्याग करेंगे। हरिवासर (उपवास) के दिन ब्रह्म-हत्या आदि समस्त पाप अन्न में प्रवेश कर जाते हैं, अतः इस समय पंचशस्य (जौ, धान, राई, उड़द-दाल, तिल आदि) भोजन करने से सभी प्रकार के पापों को ही ग्रहण करना होता है एवं मातृघाती, पितृघाती, भातृघाती और गुरुघाती पापी कहकर उसकी गणना होती है। ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थ और यतियों (त्रिदण्डि-संन्यासियों) के द्वारा एकादशी के दिन भोजन करने से गोमांस का भोजन करने के समान होता हैं। ब्रह्मघाती, सुरापायी, चोर आदि के लिए मुक्ति का विधान है, किन्तु एकादशी में अन्न भोजन करने वाले की रक्षा के लिए कोई व्यवस्था नहीं है। एकादशी में अन्न ग्रहण करने वाला व्यक्ति पितरों सहित नरकगामी होता है। हरिवासर तिथि में किसी को भोजन के लिए अनुरोध करना भी अन्याय है।

जो विधवा स्त्री एकादशी के दिन अन्नादि ग्रहण करती है, उसकी सारी सुकृति नष्ट हो जाती है एवं सर्ववर्णी, सर्वाश्रमी, विधवा, यति, सती की भी 'अन्धतामिश्र' नामक नरक में दुर्गति होती है। भक्तियुक्त होकर पुत्र-पत्नी और रिश्तेदारों के साथ दोनों पक्षों की एकादशी में उपवास करने से भगवद्-भक्ति और परम पद प्राप्त होता है। घोर विपत्ति या जनन और मरणाशुचि में भी एकादशी व्रत का त्याग नहीं करना चाहिए। एकादशी के दिन नैमित्तिक श्राद्ध आने पर उपवासी रहकर द्वादशी को श्राद्ध करना चाहिए। **उपवास के दिन कभी भी श्राद्ध नहीं करना चाहिए,** क्योंकि उस दिन देवता और पितृगण निन्दित-अन्न का भोजन नहीं करते। एकादशी के दिन श्राद्ध करने से दाता, भोक्ता और विगत आत्मा तीनों को ही नरक में जाना पड़ता है। आठ वर्ष की आयु से अस्सी वर्ष की आयु तक शुक्ल और कृष्ण—दोनों पक्षों की एकादशी में उपवास करना अबला-वृद्ध-वनिता सभी मनुष्यों का कर्त्तव्य है। वैष्णव, शैव, सौर आदि सभी मनुष्यों का कर्त्तव्य है। वैष्णव, शैव, सौर आदि सभी को ही हरिवासर-व्रत पालन करना चाहिए। शिवजी महाराज ने पार्वती देवी से कहा है,-मेरे भक्ति-बल का आश्रय लेकर हरिवासर में अन्नादि भोजन करनेवाले दुष्ट पातकी को मेरा अप्रियकर समझना। पति-पत्नी दोनों अथवा पत्नी यदि

---

1 दशमी को एक बार सुबह का भोजन, एकादशी को निर्जल व्रत और द्वादशी को एक बार सुबह का भोजन।

पति के उद्देश्य से एकादशी-व्रत का पालन करे तो वह सौगुना पुण्य की भागिनी होती है। बालक, वृद्ध, आतुर, रोग-ग्रस्त, असमर्थ व्यक्ति रात में मात्र एकबार भोजन[2] अथवा दूध-फल-मूल भोजन करके एकादशी-तिथि का पालन करेंगे

शिशुओं की रक्षा के लिए माता की तरह एवं रोगियों के परित्राण के लिए औषधि की तरह सभी जीवों की रक्षा के लिए एकादशी तिथि आविर्भूत हुई हैं। नाना प्रकार के दुःखो से भरे संसार में दुर्लभ मनुष्य जन्म प्राप्त कर जो एकादशी व्रतानुष्ठान करते हैं, वे धन्य है, वे बुद्धिमान है। एकादशी-व्रत को छोड़कर अन्य व्रत करने से हाथ में आई मणि छोड़कर लोष्ट्र (मिट्टी) की ही प्रार्थना करने के समान हो जाता है। केवल मात्र एकादशी में उपवास कर जनार्दन की भक्तिपूर्वक पूजा करने से दुःखपूर्ण संसार से मुक्ति प्राप्त की जा सकती है। संसार रूपी सर्प द्वारा दष्ट[3] सभी पापी मनुष्य एकादशी उपवास के द्वारा ही परम सुख-शान्ति प्राप्त करते है। एकादशी में अन्न के अभाव से उपवासी रहने या राजगृह में बन्दी रहने की अवस्था में एकादशी उपवास करने से भी सम्यक् उपवास का फल प्राप्त हो जाता है। गोविन्द का स्मरण और एकादशी में उपवास—यह दोनों ही निःसंदेह मनुष्य के लिए प्रायश्चित स्वरूप और संसार से उद्धार करने वाले हैं। जो सभी सुख-धर्म-गुणों के आश्रय जगतपति के अत्यन्त प्रिय और सभी धर्मों में श्रेष्ठ, एकादशी-व्रत का श्रद्धापूर्वक पालन करते हैं, वे वैकुण्ठ गति लाभ करते हैं। एकादशी-व्रतकथा श्रवण करने से, इसका अनुष्ठान करने से, इसके अनुष्ठान की अनुमति देने से अथवा व्रत पालन के लिए मनुष्यों के हृदय में श्रद्धा उत्पन्न कराने से सभी पापों से परित्राण और अति उत्तम गति प्राप्त होती है। हरिवासर को छोड़कर दान, तपस्या, तीर्थ-स्थान या अन्य किसी प्रकार का पुण्य मुक्ति का कारण नहीं होता। एकादशी-व्रत परायण व्यक्ति सर्वत्र पूज्य होते हैं; रोग, उपसर्ग, दाह, ग्लानि और कातरता से उनको भय की संभावना नहीं रहती एवं सर्वदा उनके चित्त में श्रीहरि की स्मृति बनी रहती है; उन लोगों की नित्य हरिकथा में रुचि और नित्य-धर्म में मति रहती हैं एवं श्रीकृष्ण के प्रति अतिशय अमला भक्ति प्राप्त होती है। एकादशी–पुण्य-स्वरूपिणी, सर्वपाप-विनाशिनी, विष्णु-भक्ति-

---

2 अनुकल्प मात्र (अन्न नहीं)

3 दंशन किये गये

उद्दीपनी और परमार्थ-गति-प्रदायिनी हैं। जगदीश्वर एकादशी में ही मूर्तिमान होकर विराजमान हैं। जो विष्णुमयी-शक्ति अनन्तस्वरूपा और पूरे जगत में व्याप्त होकर अवस्थित हैं, वे ही सभी प्रकार का मंगल प्रदान करने वाली एकादशी-तिथि हैं।

अरुणोदय-विद्धा या दशमी-विद्धा एकादशी का विशेष रूप से त्याग करते हुए शुद्ध एकादशी व्रत का पालन करना कर्त्तव्य है। तीनों लोकों में जितने पाप विद्यमान हैं, दशमी-संयुक्त एकादशी को उन पापों का स्थान कहा गया है। राक्षस और असुर दशमी-संयुक्त एकादशी का आश्रय लेते हैं, और द्वादशी-युक्त एकादशी को उपवासी रहने वाले व्यक्ति को भगवान वांछित फल प्रदान करते हैं। दशमी-विद्धा एकादशी को हरिवासर नहीं माना जाता है। यहाँ पर द्वादशी में उपवास और त्रयोदशी को पारण करने की विधी है। जगद्गुरु श्रील भक्तिविनोद ठाकुर जी ने गाया है, **–"माधव-तिथि भक्ति जननी, यतने पालन करि।"** 'यतने पालन करि', अर्थात यहाँ 'विद्धा का परित्याग करते हुए, व्रत पालन करने का उपदेश दिया गया है।' ग्रन्थ के अन्त में विद्धा के सम्बन्ध में संक्षिप्त विचार प्रदर्शित हुआ है। एकादशी विभिन्न नामों से कथित है एवं अष्ट-महाद्वादशियाँ भी अलग-अलग नामों से प्रसिद्ध हैं। इन सब विषयों का इस ग्रंथ में सम्पूर्ण इतिहास एवं वृत्तान्त सहित विश्लेषण हुआ है। यह ग्रन्थ एकादशी-व्रत पालन करने वालों के लिए यथेष्ट सहायक होगा, इसमें सन्देह नहीं है। इस संस्करण के परिशिष्ट अंश में "अष्ट-महाद्वादशी" निरूपण, व्रत-कृत्य सूचक कीर्तन, माहात्म्य आदि संयोजन तथा ग्रन्थ के पूर्वनिबन्ध में अधिकतर ज्ञान का पथ प्रशस्त किया गया है। व्रतपालनकारी और पाठक-पाठिका एवं श्रौतृवर्ग के द्वारा भगवद्-भक्ति लाभ करने से हम सबकी सेवा-प्रचेष्टा सार्थक होगी। अधिक क्या, असावधानीवश कुछ त्रुटि रहने से पाठकवर्ग निजगुणों से संशोधन कर लेंगे, यही अनुरोध है। अलमतिविस्तरेण-

पापांकुशा एकादशी
26 पद्मनाभ, 518 गौराब्द
7 कार्तिक. 1411 बंगाब्द. 24-10-2004.

त्रिदण्डिभिक्षु
श्रीभक्तिवेदान्त वामन

श्रीमन्मध्वाचार्य के एकादशी संबन्धित विचार

स्मार्त्तमत खण्डन–

श्वदृतो पञ्चगव्यञ्च दशम्या दुषितां त्यजेत्।
एकादशीं द्विजश्रेष्ठाः पक्षयोरुभयोरपि॥

(कृष्णामृतमहार्णवम् 129)

श्रेष्ठ ब्राह्मणगण कुत्तेके चर्मसे बने पात्रमें रखे पञ्चगव्यके त्यागकी भाँति दोनों पक्षकी दशमी विद्धा एकादशीका परित्याग करेंगे।

अथवा मोहनार्थाय मोहिन्या भगवान् हरिः।
अर्थितः कारयामास व्यासरूपी जनार्द्दनः॥
धनदार्चाविवृद्ध्यर्थं महावित्तलयस्य च।
असुराणां मोहनार्थं पाषण्डानां विवृद्धये॥
आत्मस्वरूपाविज्ञप्त्यै स्वलोकाप्राप्तये तथा।
एवं बिद्धां परित्यज्य द्वादश्यामुपवासयेत्॥

(कृष्णामृतमहार्णवम् 150-152)

अथवा व्यासरूपी भगवान् जनार्दन श्रीहरिने मोहिनीके द्वारा प्रार्थना किये जानेपर कामी लोगोंको मोहित करनेके लिए, धनकी आकांक्षासे अर्चनकी वृद्धिके लिए, परमार्थको लुप्त करनेके लिए, असुरोंको मोहन करनेके लिए, पाषण्डी लोगोंकी वृद्धिके लिए, अपने आत्मस्वरूपको न जनानेके अभिप्रायसे और जिससे विष्णु-लोककी प्राप्ति न हो सके – इसलिए ऐसा विधान करवाया था। अतएव इस प्रकारकी विद्धा एकादशीको परित्यागकर द्वादशीमें उपवास करना चाहिये।

वरं स्वमातृगमनं वरं गोमांसभक्षणम्।
वरं हत्या सुरापानमेकादश्यन्नभक्षणात्॥

(कृष्णामृतमहार्णवम् 180)

एकादशीमें अन्न भोजन करना स्व-मातृगमन, गोमांस-भक्षण, सुरापान इत्यादि कार्योंसे भी अधिक निन्दनीय है।

एकादशी कथा

एक दिन मातार पदे करिया प्रणाम।
प्रभु कहे,–माता मोहे देह एक दान॥
माता बले,–ताइ दिब, या तुमि मागिबे।
प्रभु कहे,– एकादशीते अन्न ना खाइबे॥
शची कहे,–ना खाइब, भाल-इ कहिला।
सेई हैते एकादशी करिते लागिला॥

(चैतन्य चरितामृत आदि-लीला 15/8,9,10)

एक दिन श्रीगौरसुन्दर ने शची माँ के चरणों में प्रणाम करते हुए कहा–'माँ आप मुझे एक दान प्रदान करें।' शची माँ ने कहा–'तुम जो मांगोगे वही दूँगी।' प्रभु बोले–'माँ आप एकादशी के दिन अन्न मत खाया करें।' माँ ने कहा-'तुमने ठीक कहा मैं उस दिन अन्न नहीं खाऊँगी।' उस दिन के पश्चात् शचीमाँ एकादशी का पालन करने लगी।

अपनी माँ को उपलक्ष्य [4] करके श्री चैतन्य महाप्रभु ने प्राणी मात्र को एकादशी व्रत पालन करने का निर्देश दिया है। श्री हरिभक्ति विलास (12.8) में कहा है–*एकादशी व्रतं नाम सर्वाभीष्ट-प्रदं नृणां। कर्तव्यं सर्वथा विप्र विष्णु-प्रीति-करं यतः।* अर्थात एकादशी व्रत करने से श्रीविष्णु में प्रीति होती हैं इसलिये इसका दूसरा नाम 'हरिवासर' है। अन्य अन्य सकाम व्रत करने से उनका फल तो प्राप्त होता है किन्तु न करने से कोई अपराध या पाप भी नहीं होता। एकादशी व्रत का फल है श्रीकृष्णभक्ति की प्राप्ति। अतः एकादशी न करने से अपराध तो होता ही है साथ ही व्रत का फल श्रीकृष्णभक्ति का हृदय में आविर्भाव नहीं होता।

श्रील भक्तिविनोद ठाकुर ने कहा है–

माधव तिथि भक्ति जननी यतने पालन करि।
कृष्ण वसति, वसति बलि परम आदर वरि॥

अर्थात माधव तिथि (एकादशी) भक्ति को जन्म देने वाली है, इस तिथि में श्रीकृष्ण का साक्षात निवास है, ऐसा जानकर मैं परम आदरपूर्वक इस तिथि को वरण कर

---

4 अपनी माँ के बहाने सभी बद्ध जीवों को शिक्षा देना ही श्रीमन् महाप्रभु का अभिप्राय था।

यतनपूर्वक इसका पालन करता हूँ।

"श्रीकृष्ण के लिये एकादशी तिथि जन्माष्टमी से भी श्रेष्ठ है। परम करूणामय परमेश्वर श्रीकृष्ण स्वयं माधव तिथि अर्थात् एकादशी के स्वरूप में मूर्तिमान होकर इस जगत में विराजित हैं। अनन्त स्वरूपा विष्णुमयी शक्ति समस्त जीवों के लिये सभी प्रकार का मंगल विधान करने के उद्देश्य से परमशुभ एकादशी तिथि के रूप में प्रकटित हैं।"

(श्रील गुरुदेव के प्रवचन से उद्धृत)

एकादशी व्रतोपवास का वास्तविक उद्देश्य श्री भगवान के प्रति प्रेमभक्ति प्राप्त करना है, यथा–

"शुद्ध भक्तों के संग इस व्रत का आचरण करने से धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष रूपी चतुर्वर्ग के प्रति तुच्छ बुद्धि जाग्रत होकर श्रीकृष्ण के प्रति श्रवणादि रूप प्रेमलक्षणा विशुद्ध भक्ति प्राप्त होती है।"

(स्कन्द पुराण)

"समस्त प्रकार के भोग और सिद्धियाँ हरिभक्ति रूपा एकादशी महादेवी के पीछे सदा दासी की भाँति अनुगमन करती हैं।"

(नारद पंचरात्र)

"समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाला एकादशी व्रत केवल श्रीकृष्ण के प्रीति के लिए ही पालन करना कर्त्तव्य है।"

(श्रीहरिभक्ति विलास 12-8)

एकादशी पालनकारी कथाएं

श्रीमद् भागवत में वर्णन है कि श्रीकृष्ण के पिता श्री नन्द महाराज एकादशी के दिन निराहार रह कर व्रत पालन करते थे।

एकदश्यां निराहारः समभ्यर्च्य जनार्दनम्।
स्नातुं नन्दस्तु कालिन्द्या द्वादश्यां जलमाविशत्।

(श्रीमद्भागवत 10.28.1)

अनुवाद–श्रीशुकदेवजी ने कहा–परीक्षित! नन्द महाराज ने कार्तिकशुक्ल पक्ष की एकादशी का उपवास करके भगवान जनार्दन की पूजा की तथा द्वादशी तिथि में स्नान

करने के लिये यमुना के जल में प्रवेश किया।

अम्बरीष महाराज की कथा

श्रीमद्भागवत के ही नवम् स्कन्ध में शुद्धभक्त श्री अम्बरीष महाराज की दृढ़तापूर्वक एकादशी का निराहार व्रत पालन तथा समयानुसार पारण करने की कथा का प्रसंग वर्णन है–एकादशी व्रत करने के प्रभाव से कहीं भी प्रतिहत न होने वाला ब्रह्मशाप महाराज अम्बरीष को स्पर्श भी न कर सका।

महाराज अम्बरीष बड़े भाग्यवान थे। वे भगवान् के बड़े प्रेमी एवं उदार धर्मात्मा थे। पृथ्वी के सार्वभौम सम्राट होने पर भी उनकी अपनी सम्पत्ति ऐश्वर्यादि में आसक्ति न थी। उनकी रति श्रीकृष्ण तथा उनके प्रेमी भक्तों में थी।

उन्होंने अपने मन को श्रीकृष्ण के चरणारविन्द युगल में, वाणी को भगवान के गुण कीर्त्तन में, हाथों को श्रीहरिमंदिर मार्जन सेवा में तथा कानों को भगवान् अच्युत तथा उनके भक्तों की मंगलकारी कथा श्रवण में नियुक्त कर रखा था।

श्री दुर्वासा ऋषि

एक समय कार्त्तिक मास में अम्बरीष महाराज अपनी पत्नी सहित मथुरा प्रदेश में मधुवन नामक स्थान पर आये तथा उन्होंने एक वर्ष तक द्वादशी प्रधान एकादशी व्रत

करने का नियम ग्रहण किया। व्रत की समाप्ति पर अगले कार्त्तिक मास में उन्होंने तीन रात्रि (एकादशी से पूर्व तथा एकादशी तक) उपवास किया। यमुनाजी में स्नान करके भगवान श्री कृष्ण का विराट पूजन करके दुधारु गायों का दान किया, वैष्णवों को स्वादिष्ट भगवद्प्रसाद दक्षिणा के साथ अर्पित किया। अब वे स्वयं व्रत का पारण करने को प्रस्तुत हुए। उसी समय अत्यन्त क्रोधी स्वभाव के दुर्वासा ऋषि वहाँ पधारे। राजा अम्बरीष ने उनकी अभ्यर्थना की। दुर्वासाजी को अपनी तपस्या के बल, ब्राह्मणत्व तथा श्रेष्ठता का बड़ा अभिमान था। राजा ने दुर्वासाजी के चरणों में प्रणाम कर भोजन की प्रार्थना की।

दुर्वासाजी ने निमन्त्रण स्वीकार कर लिया और स्नानादि करने यमुना तट पर चले गये। यमुना में परब्रह्म का ध्यान करते हुए वे निमग्न हो गये। इधर द्वादशी केवल घड़ी भर शेष रह गई थी। पारण के लिए अति अल्प समय था। धर्मज्ञ महाराज अम्बरीष ने चिन्तित होकर ब्राह्मणों से कहा, "अतिथि ब्राह्मण को बिना भोजन कराये स्वयं खा लेना दोष है तथा द्वादशी रहते पारण न करने से भक्ति की हानि होती है। इसलिये मैं केवल भगवान् के चरणामृत से पारण कर लेता हूँ।" श्रुतियों में कहा गया है कि जल पी लेने से पारण हो जाता है तथा ये भोजन करना, न करना दोनों ही है। यह निश्चय कर महाराज अम्बरीष ने भगवान् के चरणोदक से पारण कर लिया और दुर्वासा ऋषि के आने की प्रतीक्षा करने लगे।

दुर्वासाजी जब वापिस लौटें तो उन्होंने ध्यानयोग से जान लिया कि राजा ने पारण कर लिया है। वे अत्यन्त क्रोधित हो गये और कहने लगे–अरे ढोंगी! भगवान् स्वयं ब्राह्मणों का आदर करते है किन्तु तुमने मेरा अनादर किया है। तुमने सोच लिया जल पी लेने से हानि नहीं होगी परन्तु ब्राह्मण की अवज्ञा होगी इस पर विचार नहीं किया। मैं तुम्हें इसका दण्ड देता हूँ। ऐसा कहते हुए वे क्रोध से जल उठे। उन्होंने अपनी एक जटा उखाड़ी और अम्बरीष महाराज को मारने के लिये कृत्या उत्पन्न की। वह प्रलयकालीन अग्नि के समान दहकती हुई, हाथ में तलवार लेकर अम्बरीष महाराज पर लपकी। अम्बरीष महाराज ने अपने स्थान से हटने या अपने को बचाने का कोई प्रयास नहीं किया, वे शान्तिपूर्वक हाथ जोड़कर यथास्थान खड़े रहे। शरणागत वत्सल श्रीभगवान् ने अपने भक्त की रक्षा के लिये पहले से ही सुदर्शन चक्र को नियुक्त कर रखा था। चक्र ने

कृत्या को जलाकर भस्म कर दिया।

कृत्या को जलाने के बाद सुदर्शन चक्र दुर्वासाजी की ओर बढ़ा। वे अपनी जान बचाने के लिये भागे। वे अपनी पीठ में चक्र के ताप और स्पर्श का अनुभव कर रहे थे किन्तु वह उन्हें जला नहीं रहा था। दुर्वासाजी ने देखा मेरा सारा प्रयास विफल हो गया उलटा ये चक्र मेरे पीछे लग गया। उससे बचने के लिये वे सुमेरू पर्वत की गुफा में दौड़े, वे समस्त दिशाओं, अतल, वितल आदि लोक, लोकपालों से सुरक्षित लोक तथा स्वर्ग तक में गए। किन्तु वह जहाँ भी गए असह्य तेजवाले चक्र को उन्होंने पीछे लगा देखा। कोई उपाय न देखकर वे ब्रह्माजी के पास रक्षा के लिये गए परन्तु ब्रह्माजी ने कहा, "इस चक्र को मैं नहीं लौटा सकता, मेरी सामर्थ्य नहीं है।" ब्रह्माजी से निराश होकर दुर्वासाजी शंकरजी की शरण में गये, उन्होंने भी अपनी असमर्थता जताई और कहा, "जिनका यह चक्र है उन्हीं की शरण में जाओ, वही तुम्हारी रक्षा कर सकते हैं।" यहाँ से भी निराश होकर दुर्वासाजी भगवान् के परमधाम बैकुण्ठ में गये। जाते ही वे काँपते हुए श्रीभगवान् के चरणों में गिर पड़े और कहने लगे–हे अच्युत! हे अनन्त! हे ब्रह्मण्यदेव! हे प्रभो, मेरी रक्षा कीजिए। आप अपने चक्र से मुझे बचाइये, मेरी रक्षा कीजिए।

श्रीभगवान् ने कहा–"हे ब्राह्मण! तुम मुझे ब्रह्मण्यदेव कह रहे हो किन्तु मैं तुम्हारी रक्षा करने में असमर्थ हूँ। 'अहं भक्तपराधीनों' मैं अपने भक्तों के पराधीन हूँ, भक्त मुझसे प्रेम करते है। और मैं उनसे। मुझमें तनिक भी स्वतंत्रता नहीं है। मैं तुम्हारी रक्षा करने में समर्थ नहीं हूँ।"

दुर्वासाजी–हे ब्रह्मण्यदेव! मैं उच्च श्रेणी का ब्राह्मण हूँ। आप मेरी उपेक्षा क्यों कर रहे हैं। आप ही तो ब्राह्मणों के रक्षक हैं।

श्रीभगवान्–तुमने मेरे भक्त को जलाकर मार डालना चाहा और मैं तुम्हारी रक्षा करूँ? मैं अपने भक्तों के शत्रु की रक्षा किस प्रकार कर सकता हूँ? मेरे भक्तों ने मेरे लिये अपने स्त्री, पुत्र, धन-सम्पति सबको छोड़ दिया। हे ब्राह्मण! तुमने मेरे लिये क्या छोड़ा है? तुमने अम्बरीष का वध करने के लिये कृत्या को छोड़ा और अब चक्र से रक्षा के लिये विश्व की परिक्रमा कर रहे हो, ब्रह्मा-शिवादि के पास जा रहे हो।

दुर्वासाजी–आपके भक्त के प्रति यदि मेरा अपराध हुआ है, तो यह आपके चरणों में अपराध है तो आप ही मुझे क्षमा कर दे।

श्रीभगवान–कांटा यदि पैर में लग जाये तो क्या वह सिर से निकाला जाता है? जाओ अम्बरीष से जाकर क्षमा माँगो।

दुर्वासाजी–आप अम्बरीष का दोष नहीं देख रहे हैं, मेरा ही दोष देख रहे हैं। उसने मुझे निमंत्रण देकर स्वयं भोजन कर लिया। मुझसे पहले खाकर उसने मेरा अपमान किया है।

श्रीभगवान क्रोधित होकर बोले–अम्बरीष ने मुझे प्रसन्न करने के लिये ही एकादशी व्रत आदि किये। केवल चरणामृत का सेवन करने की खाने में गणना नहीं की जा सकती।

दुर्वासाजी–कौन अधिक महत्त्वपूर्ण है, एकादशी व्रत का समयानुसार पारण करना या ब्राह्मणों को यथा योग्य सम्मान देना?

भगवान् चिढ़कर[5] बोले–जाओ जाकर अम्बरीष से पूछो तुम मूर्ख धर्मशास्त्र के तत्व से अनभिज्ञ हो वही तुम्हें धर्म की शिक्षा देगा। मेरे पास तुम्हारे निरर्थक प्रश्नों के लिये समय नहीं है। श्रुति कहती है अर्थात् मेरे ही वचन हैं कि पानी पीने से भोजन करना और नहीं करना दोनों ही होते हैं। इस नियम के अनुसार अम्बरीष ने ब्राह्मण व द्वादशी दोनों को सम्मान दिया है। किन्तु तुम यह सब नहीं जानते और क्रुद्ध हो गये। जाओ उसी के पास, वही तुम्हें क्षमा करेगा, मैं नहीं कर सकता।

भगवान् के आदेश को सुनकर, सुदर्शन चक्र की ज्वाला से जलते हुए दुर्वासा लौटकर राजा अम्बरीष के पास आए, उनके चरणों में गिर पड़े और कहने लगे–हे राजन्, इस चक्र के असहनीय ताप से मेरी रक्षा कीजिए।

अम्बरीष महाराज चक्र की स्तुति करने लगे, उस समय उनका हृदय दयावश अत्यन्त पीडित हो रहा था। अम्बरीष महाराज की अनेकविध स्तव-स्तुति प्रार्थना से दुर्वासा को चारों ओर से संतप्त करने वाले चक्र शांत हो गये। चक्र के ताप से मुक्त होकर दुर्वासाजी का चित्त स्वस्थ हो गया तथा वे अनेकानेक आशीर्वाद देते हुए अम्बरीष

---

5 क्रोध में

महाराज की प्रशंसा करने लगे।

जब से सुदर्शन चक्र से भयभीत होकर दुर्वासाजी भागे थे तब से लेकर उनके वापस आने तक एक वर्ष का समय व्यतीत हो गया। इतने दिनों तक अम्बरीष महाराज उनके दर्शन की आशा से केवल जल पीकर रहे। अब राजा ने दुर्वासाजी को विधिपूर्वक भोजन कराया और तृप्त किया। दुर्वासाजी के जाने के बाद राजा ने उनके उच्छिष्ट का भोजन किया। दुर्वासाजी का कष्ट में पडना फिर अपने द्वारा उनका कष्ट दूर होना उन्होंने भगवद् कृपा के रूप में जाना।

दुर्वासा ऋषि ने गम्भीरतापूर्वक विचार किया कि यद्यपि मैं ब्रह्मवादी श्रेष्ठ ब्राह्मण हूँ किंतु सुदर्शन ने समस्त ब्रह्मांड में मुझे भगाया, न मैं अपने आपको बचा पा रहा था, न ही मुझे कोई शरण दे सका। यह अवश्य ही एकादशी व्रत की शक्ति रही होगी। इसी बात का प्रचार करने के लिये दुर्वासाजी तपलोक को चले गये।

राजा रुक्मांगद की कथा

पुराणों में राजा रुक्मांगद का वर्णन मिलता है–राजा रुक्मांगद सार्वभौम राजा थे। वे भगवद् भक्ति परायण तथा एकादशी व्रत पालन के विशेष मनोयोगी थे। वे स्वयं तो व्रत करते ही थे समस्त प्रजा को भी राज-आज्ञा के द्वारा एकादशी व्रत कराते थे। राजा के इस आदेश से सभी राज्यवासी एकादशी व्रत पालनकर वैकुण्ठ जाने लगे और यम लोक खाली हो गया। यमराज और पाप-पुण्य का लेखा रखने वाले उनके सहायक चित्रगुप्त ने देवर्षि नारद के साथ सत्यलोक में ब्रह्मा के निकट सब वृत्तांत कह सुनाया। ब्रह्मा ने यमराज की परेशानी सुनकर कुछ देर चिन्ता की और एक परम सुंदरी नारी की सृष्टि की। उसको मोहिनी नाम प्रदान करते हुए राजा रुक्मांगद को अपने रूप सौंदर्य से मोहित करने का आदेश दिया।

मोहिनी ने राजा के राज्य के निकट गमन किया और अपूर्व रूप सौंदर्य बिखेरती हुई अत्यन्त मधुर स्वर में गान करने लगी। राजा उस समय प्रजा की रक्षा के उद्देश्य से घोड़े पर चढ़कर भ्रमण कर रहे थे। वहाँ उन्होंने अद्भुत संगीत ध्वनि सुनी। उस ध्वनि से आकृष्ट होकर पशु-पक्षी भी उसी दिशा की ओर दौड रहे थे। राजा भी कौतूहलवश वहाँ पहुँचे। उन्होंने गौर वर्णा परमसुन्दरी नारी मोहिनी को देखा। उसके रूप और संगीत से

मुग्ध होकर उन्होंने मोहिनी से विवाह का प्रस्ताव रखा।

मोहिनी ने कहा–मैं ब्रह्मा की कन्या हूँ, आपकी यश कीर्ति श्रवण करके आपको पति रूप में पाने के लिए संगीत द्वारा शंकरजी की उपासना कर रही थी। आप से विवाह करने के लिये मेरी शर्त है कि आप मेरी कही हर बात मानेंगे। राजा ने मोहिनी के हाथ पर हाथ रख कर शपथ ली, "मोहिनी तुम जो अभिलाषा करोगी मैं उसे पूर्ण करूँगा।" मोहिनी के साथ राजा अपनी राजधानी में लौट आए।

अपने पुत्र धर्मांगद को राज्य देकर वह मोहिनी के साथ रहने लगे। कई वर्ष बीत गए सुख विलास में मग्न रहने पर भी उन्होंने एकादशी व्रत पालन की अवहेलना नहीं की। अब उनके हृदय में कार्तिक व्रत पालन की इच्छा हुई और उन्होंने मोहिनी से इसकी आज्ञा मांगी। उसी समय राजा को अपने पुत्र धर्मांगद के द्वारा कराई घोषणा जो सुनाई दी–कि आगामी कल एकादशी तिथि है सभी प्रजाजन इसका पालन करें। यह श्रवण कर राजा ने मोहिनी से कहा, "मोहिनी तुम्हारी इच्छानुसार मैंने ज्येष्ठा रानी संध्यावली को कार्तिक व्रत पालन के लिये नियुक्त किया है, किन्तु एकादशी व्रत मैं स्वयं करूँगा। तुम भी संयमपूर्वक मेरे साथ यह व्रत पालन करो।

मोहिनी ने उन्हें स्मरण कराया कि आपने मेरी सभी इच्छा पूर्ण करने की शपथ ली थी। राजा ने कहा, "अवश्य ही पूर्ण करूँगा, तुम कहो।" उत्तर में मोहिनी ने कहा, "मेरी इच्छा है आप एकादशी व्रत न करें और मेरे साथ भोजन करे।" राजा ने कहा, "मोहिनी! मेरा व्रत भंग मत करो, मैं तुम्हारी अन्य कोई भी इच्छा पूर्ण करूँगा। एकादशी व्रत पालन करने का प्रचार मैंने स्वयं किया है, मैं स्वयं ही उसे भंग कर दूँ। यह संभव नहीं है।"

राजा का उत्तर सुनकर मोहिनी अत्यन्त क्रोधित हो उठी और व्यंगपूर्वक बोली, "यदि व्रत भंग नहीं करोगे तो प्रतिज्ञा भंग होगी और नरकवास मिलेगा और मैं भी आपको छोड़कर चली जाउँगी।" उसी समय धर्मांगद वहाँ आए और समस्त वृत्तांत को मोहिनी से श्रवण किया। उसने पिता से विमाता मोहिनी की इच्छा पूर्ण करने का अनुरोध किया। राजा रुक्मांगद ने उत्तेजित होकर कहा–"मोहिनी रहे या जाये, जीये या मरे मैं एकादशी व्रत से विरत नहीं होउँगा।"

धर्मांगद अपनी माता संध्यावली को लेकर आए और मोहिनी को समझाने के लिये कहा। बहुत अनुनय-विनय करने पर भी मोहिनी अपनी बात पर अड़ी रही। उसने कहा–"राजा यदि एकादशी को भोजन नहीं करेंगे तो उसके बदले में अपने प्रिय पुत्र का मस्तक छेदन कर मुझे प्रदान करें।" यह सुनते ही संध्यावली काँपने लगी कुछ संभलने के बाद उसने राजा से कहा–"हे महाराज! धर्म हानि की अपेक्षा पुत्र का प्राण नाश करना ही कल्याणप्रद है। पुत्र पर माता का अत्यधिक स्नेह होता है किन्तु आपकी प्रतिज्ञा भंग होने पर धर्म हानि की आशंका से मैं पुत्र ममता की तिलांजलि दे रही हूँ, आप स्नेह-ममता का परित्याग कर पुत्र का बलिदान दें।" उसी समय राजपुत्र धर्मांगद ने एक पैनी तलवार राजा के हाथ में दी और कहा, "पिताजी! आप विलम्ब न करें और अपनी प्रतिज्ञा की रक्षा हेतु मेरा वध करें।" मोहिनी ने पुनः कहा–"या तो एकादशी को भोजन करो, अन्यथा पुत्र का वध करो।"

राजा ने हाथ में तलवार ग्रहण की, धर्मांगद भी बलि देने को प्रस्तुत हो गये। पृथ्वी कम्पित होने लगी, समुद्र में ज्वार आ गया। उसी समय भगवान श्रीहरि वहाँ प्रकट हो गये उन्होंने राजा के हाथ से तलवार ले ली और कहा–राजन! मैं तुम्हारे व्रत पालन की दृढता से अति प्रसन्न हुआ हूँ। तुम स्त्री पुत्र सहित मेरे साथ वैकुंठ धाम गमन करो। श्रीहरि ने राजा को स्पर्श किया और अदृश्य हो गये।

एकादशी तत्त्व

पद्मपुराण में श्री व्यासदेव-जैमिनी ऋषि संवाद में कथा आती है–एक समय पुरुषोत्तम श्रीभगवान् गरुड पर आरोहण कर यमपुरी को गए। यमराज के साथ वार्तालाप करते समय उन्होंने क्रन्दन ध्वनि सुनी और उसका कारण पूछा। यमराज ने उत्तर दिया–हे देव! पातकी मर्त्य जीव अपने पापकर्मों के दोष से अत्यन्त दुखजनक नरकयंत्रणा झेल रहे हैं। ये क्रन्दन ध्वनि उन्हीं की हैं।

यह सुनकर श्रीकृष्ण उन जीवों को देखने पहुँचे। उन पापियों को असह्य यंत्रणा से पीड़ित देखकर, उनका हृदय करुणा से विगलित हो गया। वे चिन्ता करने लगे, यह मेरी सृष्ट प्रजा है। इनके पापों के निवारण के लिये मुझे कुछ उपाय करना होगा। यह सोचकर उन्होंने स्वयं ही एकादशी तिथि का रूप धारण कर लिया। उन समस्त पापियों को

एकादशी व्रत का आचरण कराया। उसके प्रभाव से वह सभी पापी पापमुक्त हो गये और परमधाम वैकुण्ठ को गमन किया। इसलिये हे वत्स जैमिनी! तुम एकादशी तिथि को श्रीविष्णु की मूर्ति कहकर ही जानना। एकादशी समस्त सुकर्मों में श्रेष्ठ और समस्त व्रतों में उत्तम है।

करुणामय भगवान् श्रीकृष्ण ने एक समय विचार किया कि मुझे भूल जाने के कारण प्राणी दुख-कष्ट भोग रहे हैं। वे पतित और असहाय हैं। उन्हें मैं अपने धाम में किस प्रकार ला सकता हूँ? यह सोचकर उन्होंने स्वयं ही एकादशी तिथि का रूप धारण कर लिया। सभी चिन्मय समय श्रीकृष्ण के ही अन्तर्गत है। जैसे श्रीमती राधिका श्रीकृष्ण का प्रकाश हैं और उनके वामांग से प्रकट हुई हैं। श्रीकृष्ण के स्वयं एकादशी रूप धारण करने के कारण यह 'माधव तिथि' कहलाई और भक्ति को जन्म देने वाली बनी। एकादशी के दिन श्रीकृष्ण इस धराधाम पर आते हैं और इस व्रत का पालन करने वालों को विशेष कृपा दान करते हैं।

कुछ समय व्यतीत होने पर पाप-पुरुष ने श्रीकृष्ण के समीप जाकर हाथ जोड़कर दीनतापूर्वक प्रार्थना की। आपके द्वारा पाप विनाशक एकादशी सृष्टि करने से मैं क्षीण होता जा रहा हूँ, क्योंकि इस व्रत के पालन करने वालों पर मेरा प्रभाव नहीं पड़ता। अब मैं इस जगत में किसका आश्रय करके वर्तमान रहूँ। हे केशव! एकादशी तिथि के भय से मेरी रक्षा कीजिए।

श्रीभगवान् ने हँसते हुए उस पापपुरुष से कहा, "अहो! तुम दुखी मत होओ। त्रिभुवन पवित्रकारिणी एकादशी के दिन तुम पंचशस्य (गेहूँ, जौ, धान, उड़द-दालें, राई, तिल आदि) में निवास करो मैं तुम्हें यह स्थान देता हूँ। जो लोग एकादशी के दिन अन्न का भोजन करते हैं, वह ब्रह्म हत्या आदि के समान भयंकर पापों का भोजन करते हैं तथा पितरों सहित नरकवास भोगते हैं।"

एकादशी के दिन न तो अन्न का दान करे और न ही किसी को अन्न खाने की प्रेरणा दे। ऐसा व्यक्ति भी उक्त पापों का भागी बनता है। एकादशी व्रत नित्य और सर्वदा पालनीय है। यह नहीं कि कभी एकादशी व्रत कर लिया और कभी छोड़ दिया। इसकी नित्यता का मुख्य कारण है कि इसमें श्रीकृष्ण का संतोष विधान होता है। श्रीरूप

गोस्वामी पाद् ने भक्ति के चौसठ अंगों में एकादशी व्रत का पालन भी आवश्यक बताया है। प्रत्येक मास में कृष्ण तथा शुक्ल पक्ष में एकादश दिवस को एकादशी तिथि आती है। इसके अतिरिक्त लगभग ढाई वर्ष में अधिक मास या पुरुषोत्तम मास के समय भी दो एकादशियाँ आती है।

कभी विशेष योग के कारण महाद्वादशी भी उपस्थित होती है। उस अवसर पर एकादशी के स्थान पर महाद्वादशी का व्रत करना चाहिए।

एकादशी व्रत तालिका

मास का नाम	पक्ष का नाम	एकादशी का नाम
वैशाख	कृष्ण	वरूथिनी
वैशाख	शुक्ल	मोहिनी
ज्येष्ठ	कृष्ण	अपरा
ज्येष्ठ	शुक्ल	निर्जला
आषाढ़	कृष्ण	योगिनी
आषाढ़	शुक्ल	शयनी
श्रावण	कृष्ण	कामिका
श्रावण	शुक्ल	पवित्रारोपणी
भाद्र	कृष्ण	अन्नदा
भाद्र	शुक्ल	पार्श्वैकादशी
आश्विन	कृष्ण	इन्दिरा
आश्विन	शुक्ल	पापांकुशा या पाशांकुशा
कार्तिक	कृष्ण	रमा
कार्तिक	शुक्ल	उत्थान या प्रबोधिनी
अग्रहायण	कृष्ण	उत्पन्ना
अग्रहायण	शुक्ल	मोक्षदा

मास का नाम	पक्ष का नाम	एकादशी का नाम
पौष	कृष्ण	सफला
पौष	शुक्ल	पुत्रदा
माघ	कृष्ण	षट्तिला
माघ	शुक्ल	भैमी
फाल्गुन	कृष्ण	विजया
फाल्गुन	शुक्ल	आमलकी
चैत्र	कृष्ण	पापमोचनी
चैत्र	शुक्ल	कामदा
पुरुषोत्तम मास	कृष्ण	कमला
पुरुषोत्तम मास	शुक्ल	कामदा

महाद्वादशी

उन्मीलनी व्यंजुली च त्रिस्पृशा पक्षवर्द्धिनी ।
जया च विजया चैव जयन्ती पापनाशिनी ॥
द्वादश्योऽष्टौ महापुण्याः सर्व्वपापहरा द्विज ।
तिथियोगेन जायन्ते चतस्रश्चापरास्तथा ।
नक्षत्रयोगाच्च बलात् पापं प्रशमयन्ति ताः ॥ ”

(हरि भक्ति विलास 13/265-266)

हे द्विज–उन्मिलनी, व्यंजुली, त्रिस्पृशा, पक्षवर्द्धिनी, जया, विजया, जयन्ती और पापनाशनी यह अष्ट द्वादशियाँ महापवित्रा और निखिल पाप का हरण करने वाली हैं। उनमें प्रथम चार योग अर्थात् एकादशी द्वादशी के विशेष योग से, तथा अन्य चार विशेष नक्षत्र योग उपस्थित होने पर उत्पन्न होती हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि एक ओर एकादशी व्रत पालन श्रीहरि को प्रिय है और उनकी भक्ति को जन्म देने वाली है। दूसरी ओर एकादशी के दिन समस्त प्रकार के भयंकर पाप अनाज में आश्रय करके अवस्थान करते हैं। इसलिये उस दिन अन्न ग्रहण करना पाप ग्रहण करने के समान है।

अब पूर्व पक्ष उठाते हैं कि वैष्णव तो केवल श्रीकृष्ण निवेदित महाप्रसाद ही ग्रहण करते हैं। महाप्रसाद समस्त प्रकार के पापोंसे निर्मुक्त तथा विशुद्ध होता है तो उसे ग्रहण करने में क्या हानि है? उत्तर में कहते है कि श्रीकृष्ण प्रीतिलाभ करना ही एकादशी व्रत का मुख्य उद्देश्य है और वैष्णवों का भी यही उद्देश्य है। पाप का भक्षण हुआ या नहीं हुआ ऐसी चिन्ता करने से अपने अमंगल या सुख-दुख की भावना करना एक वैष्णव का कर्तव्य नहीं है। वैष्णव का कर्तव्य समस्त कृत्यों में श्रीकृष्ण की प्रीति को लक्ष्य करना है अपने मंगल-अमंगल को नही। इस विषय में श्री चैतन्य महाप्रभु ने एक आदर्श प्रस्तुत किया है। महाप्रभु महाप्रसाद को श्रीकृष्ण का साक्षात अधरामृत जानकर विशेष प्रीतिपूर्वक ग्रहण करते थे। कहते थे – महाप्रसाद प्राप्त होते ही तुरन्त उसका सेवन करो।

एक समय एकादशी के दिन गोपीनाथ सार्वभौम भट्टाचार्य के साथ प्रसाद लेकर उपस्थित हुए जिसमें विभिन्न प्रकार के अन्न व्यंजनादि श्रीजगन्नाथ जी का महाप्रसाद था। महाप्रभु के साथ स्वरूप दामोदर, राय रामानन्द, वक्रेश्वर तथा अनेक क्षेत्रवासी भक्तजन बैठे थे।

एकदिन गौरहरि , श्रीगुण्डिचा परिहरि , जगन्नाथवल्लभे बसिला।
शुद्ध एकादशी - दिने , कृष्णनाम सुकीर्त्तने , दिवस रजनी काटाइला॥
संगे स्वरूपदामोदर , रामानन्द , वक्रेश्वर , आर जत क्षेत्र वासिगण॥
प्रभु बले – एकमने , कृष्णनाम - संकीर्त्तने , निद्राहार करिये वर्जन॥
केह कर संख्यानाम , केह दण्डपरणाम , केह बल रामकृष्ण - कथा।
यथा तथा पड़ि सबे , गोविन्द गोविन्द रबे , महाप्रेमे प्रमत्त सर्वथा॥
हेनकाले गोपीनाथ , पड़िछा सार्वभौम - साथ ,
गुण्डिचा - प्रसाद लइया आइल।
अन्न - व्यंजन , पिठा , पाना , परमान्न ,
दधि , छाना , महाप्रभु - अग्रेते धरिल॥
प्रभुर साज्ञाय सबे , दण्डवत् पड़ि तबे , महाप्रसाद वन्दिया वन्दिया।
त्रियामा रजनी सबे , महाप्रेम मग्नभावे , अकैतवे नामे काटाइया॥
प्रभु - आज्ञा शिरे धरि , प्रातःस्नान सबे करि , महाप्रसाद सेवाय पारण।

करि हृष्ट चित्त सबे, प्रभुर चरणे तबे, कर जोड़ करे निवेदन॥
सर्व-व्रत-शिरोमणि , श्रीहरिवासरे जानि, निराहारे करि जागरण।
जगन्नाथ प्रसादान्न , क्षेत्रे सर्वकाले मान्य, पाइलेइ करिये भक्षण॥
ए संकटे क्षेत्रवासे , मने हय बड़ त्रासे , स्पष्ट आज्ञा करिये प्रार्थना।
सर्ववेद आज्ञा तव, जाहा माने ब्रह्मा -शिव, ताहा दिया घुचाओ यातना॥
प्रभु बले,भक्ति-अंगे, एकादशी -मान-भंगे, सर्वनाश उपस्थित हय।
प्रसाद -पूजन करि, परदिने पाइले तरि, तिथि परदिने नाहि रय॥
श्रीहरिवासर -दिने, कृष्णनाम -रसपाने , तृप्त हय वैष्णव सुजन।
अन्य रस नाहि लय, अन्य कथा नाहि कय, सर्वभोग करये वर्जन॥
प्रसाद -भोजन नित्य , शुद्ध वैष्णवेर कृत्य , अप्रसाद ना करे भक्षण।
शुद्ध -एकादशी जबे, निराहार थाके तबे, पारणेते प्रसाद -भोजन॥
अनुकल्प -स्थानमात्र , निरन्न प्रसादपात्र , वैष्णवके जानिह निश्चित।
अवैष्णव जन जाँरा प्रसाद -छलेते ताँरा , भोगे हय दिवानिशि रत।
पाप-पुरुषेर संगे , अन्नाहार कर रंगे , नाहि माने हरिवासर -व्रत॥
भक्ति-अंग-सदाचार , भक्तिर सम्मान कर, भक्तिदेवी -कृपा-लाभ हबे।
अवैष्णव -संग छाड़, एकादशी -व्रत धर, नाम-व्रते एकादशी तबे॥
प्रसाद -सेवन आर श्रीहरिवासरे।
विरोध न करे, कभु बुझह अन्तरे॥
एक अंग गाने, आर अन्य अंगे द्वेष।
जे करे, निर्बोध सेइ जानह विशेष॥
जे अंगेर जे देश काल-विधि-व्रत।
ताहाते एकान्त -भावे हओ भक्ति -रत॥
सर्वे अंगेर अधिपति ब्रजेन्द्रनन्दन।
जाहे तेंह तुष्ट ताहा करह पालन॥
एकादशी -दिने निद्राहार -विसर्जन।
अन्य दिने प्रसाद -निर्माल्य सुसेवन॥

श्रीनामभजन आर एकादशी -व्रत।
एक तत्त्व नित्य जानि ' हओ ताहे रत॥

(श्रीप्रेमविवर्त्त)

प्रभु की आज्ञा से सभी ने महाप्रसाद को दण्डवत् प्रणाम किया, समस्त रात्रि कीर्त्तन में व्यतीत की तथा प्रातःकाल सबने स्नान करके महाप्रसाद के द्वारा व्रत का पारण किया। इसके पश्चात सभी ने प्रफुल्लित चित्त से करबद्ध हो महाप्रभु से कहा–सर्वव्रत शिरोमणि एकादशी के दिन निराहार रह कर जागरण करना चाहिए। साथ ही श्री जगन्नाथ जी का महाप्रसाद पाते ही तुरन्त भक्षण करना चाहिए ऐसा भी आदेश है हम लोग इनमें से कौन सी आज्ञा का पालन करें? इस विषय में वेदों की क्या आज्ञा है? आप इसका स्पष्टीकरण करके इस दुविधामय संकट से हमारा निस्तार करें।

प्रभु ने कहा–भक्ति का अंग एकादशी को भंग करने से सर्वनाश होता है। महाप्रसाद का पूजन करके उसे अगले दिन पाना चाहिये। भक्ति के समस्त अंगो के अधिपति स्वयं श्री ब्रजेन्द्रनन्दन हैं, वे जिस प्रकार संतुष्ट हो उसी का पालन करो। एकादशी के दिन निद्रा व आहार का परित्याग करो और अन्य दिनों में निर्माल्य प्रसाद का सेवन करो। एकादशी व्रत और नाम भजन को एक ही तत्त्व जानकर उसमें अनुरक्त हो जाओ।

एकादशी व्रत की विधि

शुद्ध एकादशी का नाम हरिवासर है। विद्धा एकादशी का त्याग करना चाहिए। महाद्वादशी उपस्थित होने पर एकादशी छोड़कर द्वादशी का पालन करना चाहिए। पूर्व दिन ब्रह्मचर्य का पालन, एकादशी के दिन निर्जल उपवास, रात्रि जागरण के साथ निरन्तर भजन, उपवास के दूसरे दिन भी ब्रह्मचर्य का पालन और उपयुक्त समय पर पारण करना ही हरिवासर का सम्मान करना हैं। सामर्थ्यहीन अथवा शक्तिहीन अवस्था में प्रतिनिधि या अनुकल्प की व्यवस्था है। फल, दुग्ध, जल, घृत, पञ्चगव्य अथवा वायु– ये सब वस्तुएँ क्रमशः एक से दूसरी श्रेष्ठ है। महाभारत उद्योग पर्व के अनुसार जल, मूल, फल, दुग्ध, धृत, गुरूवचन और औषधि–इनसे व्रत नष्ट नहीं होता। अनुकल्प में केवल फलाहार की व्यवस्था है। अतएव अपनी एकादश (पाँच कर्मेन्द्रियाँ, पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ एवं मन) इंद्रियों को संयमित करके एकादशी का पालन करें।

एकादशी तिथि का निर्णय

श्री चैतन्य चरितामृत मध्यलीला में सनातन शिक्षा के अन्तर्गत महाप्रभु कहते हैं–

एकादशी , जन्माष्टमी , वामनद्वादशी।
श्रीरामनवमी ,आर नृसिंह चतुर्दशी॥
एइ सबे विद्धा -त्याग अविद्धा करण।
अकरणे दोष, कैले भक्तिर लंभन॥

(श्रीचैतन्यचरितामृतमध्य-24/341-342)

एकादशी को अरूणोदय काल अर्थात् सूर्योदय से पूर्व एक घंटा छत्तीस मिनिट के मध्य यदि दशमी किंचित स्पर्श करे तब वह एकादशी विद्धा कहलाती है। यदि एकादशी के शेष भाग में द्वादशी शुरू हो जाये तब इसमें कोई दोष नहीं होता। वही पालनीय है। अधिक जानकारी के लिये श्रीहरिभक्तिविलास ग्रंथ में बारह और तेरह अध्याय द्रष्टव्य हैं।

एकादशी कीर्त्तन

श्रीहरिवासरे हरि-कीर्त्तन विधान।
नृत्य आरम्भिला प्रभु जगतेर प्राण॥
पुण्यवन्त श्रीवास -अंगने शुभारंभ।
उठिल कीर्त्तन -ध्वनि 'गोपाल गोविन्द '॥
मृदंग -मंदिरा[6] *बाजे शंख-करताल।*
संकीर्त्तन संगे सब हइल मिशाल॥
ब्रह्माण्ड भेदिले ध्वनि पुरिया आकाश।
चौदिकेर अमंगल जाय सब नाश॥
उषःकाल हइले नृत्य करे विश्वम्भर।
यूथ यूथ हइल जत गायन सुन्दर॥
श्रीवास -पंडित लइया एक सम्प्रदाय।
मुकुन्द लइया आर जन-कत गाय॥

---

6 मंजीरा

लइया गोविन्द घोष आर कत जन।
गौरचन्द्र -नृत्ये सबे करेन कीर्त्तन॥
धरिया बुलेन नित्यानन्द महाबली।
अलक्षिते अद्वैत लयेन पदधुलि॥
गदाधर - आदि जत सजल-नयने।
आनन्दे विह्वल हइल प्रभुर कीर्त्तने॥
जखन उद्दण्ड नाचे प्रभु विश्वम्भर।
पृथिवी कम्पित हय, सबे पाय डर॥
कखनो वा मधुर नाचये विश्वम्भर।
जेन देखि नन्देर नन्दन नटवर॥
अपरूप कृष्णवेश , अपरूप नृत्य।
आनन्दे नयन-भरि' देखे सब भृत्य॥
निजानन्दे नाचे महाप्रभु विश्वम्भर।
चरणेर ताल शुनि अति मनोहर॥
भाव-भरे माला नाहीं रहे गलाय।
छिण्डिया पड़ये गिया भकतेर पाय॥
चतुर्द्दिके श्रीहरि -मंगल-संकीर्त्तन।
माझे नाचे जगन्नाथ -मिश्रेर नन्दन॥
जाँर नामानन्दे शिव वसन ना जाने।
जाँर यशे नाचे शिव, से नाचे आपने॥
जाँर नामे वाल्मीकि हइला तपोधन।
जाँर नामे अजामिल पाइल मोचन॥
जाँर नाम श्रवणे संसार-बन्ध घुचे।
हेन प्रभु अवतरि ' कलियुगे नाचे॥
जाँर नाम गाइ', शुक-नारद बेड़ाय।
सहस्र -वदन प्रभु जाँर गुण गाय॥

सर्व - महा - प्रायश्चित्त जे प्रभुर नाम।
से प्रभु नाचये , देखे जत भाग्यवान्॥
प्रभुर आनन्द देखि ' भागवतगण।
अन्योन्ये गला धरि ' करये क्रन्दन॥
सबार अंगेते शोभे श्रीचन्दन - माला।
आनन्दे गायेन कृष्ण - रसे हइ ' भोला॥
यतेक वैष्णव - सब कीर्त्तन - आवेशे।
ना जाने आपन देह , अन्य जन किसे॥
जय- कृष्ण - मुरारी - मुकुन्द - वनमाली।
अहर्निश गाय सबे हइ ' कुतूहली।।
अहर्निश भक्त संगे नाचे विश्वम्भर।
शान्ति नाहि कारो , सबे सत्य - कलेवर॥
एइमत नाचे महाप्रभु विश्वम्भर।
निशि अवशेष मात्र से एक प्रहर॥
एइमत आनन्द हय नवद्वीप - पुरे।
प्रेमरसे बैकुण्ठेर नायक विहरे॥
ए सकल पुण्यकथा जे करे श्रवण।
भक्त संगे गौरचन्द्र रहु ता 'र मन॥
श्रीकृष्णचैतन्य - नित्यानन्दचाँद जान।
वृन्दावन - धाम तछु पदयुगे गा 'न॥

(श्रीचैतन्यभागवत)

अनुकूल ग्रहण – वाचिक और मानसिक (एकादशी-कीर्तन)

शुद्ध भकत , चरण - रेणु ,
भजन अनुकूल।
भकत सेवा , परम सिद्धि ,

प्रेमलतिकार मूल॥
माधव-तिथि, भक्ति जननी,
यतने पालन करि।
कृष्णवसति , वसति वलि′,
परम आदरे वरि॥
गौर आमार, जे सब स्थाने ,
करल भ्रमण रङ्गे।
से सब स्थान, हेरिबो आमि,
प्रणयि -(भकत-) संगे॥
मृदंग-वाद्य , सुनिते मन,
अवसर सदा याचे।
गौर-विहित, कीर्त्तन सुनि′,
आनन्दे हृदय नाचे॥
युगलमूर्ति , देखिया मोर,
परम आनन्द हय।
प्रसाद -सेवा, करिते हय,
सकल प्रपञ्च -जय॥
जे दिन गृहे, भजन देखि,
गृहेते गोलोक भाय।
चरण-सीधू देखिया गङ्गा ,
सुख ना सीमा पाय॥
तुलसी देखि′, जुड़ाय प्राण ,
माधवतोषणी जानि′।
गौर-प्रिय , शाक-सेवने ,
जीवन सार्थक मानि॥
भकति विनोद, कृष्ण -भजने,

अनुकूल पाय जाहा।
प्रतिदिवसे , परम-सुखे ,
स्वीकार करये ताहा॥

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

अनुवाद–शुद्ध भक्तोंकी चरणरज ही भजनके अनुकूल है। भक्तोंकी सेवा ही परमसिद्धि है तथा प्रेमरूपी लताका मूल (जड़) है। माधव तिथि (एकादशी) भक्तिको भी जन्म देने वाली है तथा इसमें कृष्णका निवास है, ऐसा जानकर परम आदरपूर्वक इसको वरणकर यत्नपूर्वक पालन करता हूँ। मेरे गौरसुन्दरने जिन-जिन स्थानोंमें आनन्दपूर्वक भ्रमण किया; मैं भी प्रेमी भक्तोंके साथ उन सब स्थानोंका दर्शन करूँगा। मृदङ्गकी मधुर ध्वनिको सुननेके लिए मेरा मन सर्वदा लालायित रहता है तथा श्रीगौरसुन्दरसे सम्बन्धित कीर्तनोंको सुनकर आनन्दसे भरकर मेरा हृदय नाचने लगता है। युगल मूर्त्तिका दर्शनकर मुझे परम आनन्द प्राप्त होता है। महाप्रसादका सेवन करनेसे मायाको भी जय किया जा सकता है।

जिस दिन घरमें भजन-कीर्तन होता है, उस दिन घर साक्षात् गोलोक हो जाता है। श्रीभगवानका चरणामृत और श्रीगंगाजीका दर्शनकर तो सुखकी सीमा ही नहीं रहती तथा माधवप्रिया तुलसीजीका दर्शनकर त्रितापोंसे दग्ध हुआ हृदय सुशीतल हो जाता है। गौरसुन्दरके प्रिय सागका आस्वादन करनेमें ही मैं जीवनकी सार्थकता मानता हूँ। कृष्णभजनके अनुकूल जीवननिर्वाहके लिए जो कुछ पाता है, यह भक्तिविनोद प्रतिदिन उसे सुखपूर्वक ग्रहण करता है।

एकादशी पर श्रील गुरुदेव द्वारा प्रदत्त प्रवचनों की सूची

04/07/1994	श्रीकेशवजी गौड़ीय मठ, मथुरा	एकादशी कथा
05/06/1998	लास ऐंजल्स, केलिफोर्निया	एकादशी एक दिन नहीं अपितु स्वयं श्रीकृष्ण हैं!
13/05/2000	हवाई द्वीप	एकादशी व्रत
2001	ह्यूस्टन, टेक्सास	एकादशी समस्त कामनाओं को पूर्ण करती हैं

22-24/08/2001	श्रीकेशवजी गौड़ीय मठ, मथुरा	अम्बरीष महाराज की महिमा
23/02/2002	ब्रिस्बेन, आस्ट्रेलिया	माधव तिथि
27/05/2007	ह्यूस्टन, टेक्सास	राजा रुक्मांगद की कथा

अन्न ग्रहण न करने का वैज्ञानिक कारण

प्रत्येक मास के शुक्ल और कृष्ण पक्ष में एकादशी से पूर्णिमा और एकादशी से अमावस्या तक समुद्र में जबरदस्त ज्वार आता है लहरें बहुत ऊँची ऊँची उठती हैं। इसका कारण है इन पाँच दिनों में चन्द्रमा पृथ्वी के कुछ निकट आ जाता है और पानी को आकर्षित कर बलात् अपनी ओर खींचता है। मनुष्य शरीर में लगभग 90 प्रतिशत तरल होता है, इस पानी पर भी उपयुक्त दिनों में चन्द्रमा का प्रभाव पड़ता है। अन्न ग्रहण करने से अन्न इस पानी को सोख लेते है और चन्द्रमा द्वारा भी पानी खींचने के कारण रोग होने की संभावना हो जाती है। मनुष्य शरीर एक मशीन की भांति है, हम दिन में तीन बार भोजन करते हैं जिससे इस मशीन को विश्राम नहीं मिलता इसलिये एकादशी के दिन भोजन न करने से शरीर को विश्राम मिलता है तथा नाम-भजन के लिये अधिक समय भी मिलता है और भक्ति भी पुष्ट होकर वृद्धि को प्राप्त करती है।

–श्रील भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराज (हवाई, 13 मई 2000)

अपरा एकादशी

इस ज्येष्ठ कृष्ण-पक्षीय 'अपरा' नामक एकादशी के व्रत की कथा ब्रह्माण्ड पुराण के युधिष्ठिर-श्रीकृष्ण संवाद में वर्णित है।

इस ग्रन्थ में इस प्रकार का वर्णन आता है कि एक बार महाराज युधिष्ठिर जी ने भगवान श्रीकृष्ण जी से पूछा – हे जनार्दन! ज्येष्ठ कृष्ण-पक्षीय एकादशी का क्या नाम है व इस व्रत की क्या महिमा है – आप कृपा करके मुझे बतायें।

महाराज युधिष्ठिर जी के प्रश्न के उत्तर में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं – महाराज युधिष्ठिर! लोगों के कल्याण के लिये आपने बड़ा अच्छा प्रश्न पूछा है। सचमुच ये एकादशी बहुत ही पुण्यदायक और बड़े-बड़े पापों के ढेरों को खत्म करने वाली है। ये एकादशी असीम फलों को प्रदान करने वाली है। इसीलिए इस एकादशी का नाम

'अपरा' है।

देवपुराधिपति महाभागवत् महाराज रुक्मांगद ने अपने राज्य में एक सुन्दर पुष्पोद्यान लगाया। यह उद्यान इतना मनोरम था कि लोगों के लिये वह एक दर्शनीय-स्थल बन गया। उस उद्यान में आने वाले लोग वहाँ आकर खिले हुए फूल तोड़-तोड़ करके ले जाते थे। परिणामस्वरूप राजा को एक भी फूल मिलना मुश्किल हो गया। फूलों के अभाव में वह उद्यान उजाड़-वीरान हो जाता। उद्यान की ऐसी दुर्दशा देखकर राजा बहुत उदास हो गया। राजा ने चौकीदारों की संख्या बढ़ा दी। लोगों ने फूल तोड़ने बन्द कर दिये किन्तु फूलों की चोरी होती ही रही, कोई ठोस परिणाम नहीं निकला। इसके अतिरिक्त अन्य बहुत सारे उपाय किये परन्तु कोई प्रभाव नहीं पड़ा क्योंकि अब फूलों की चोरी करने वाले मनुष्य तो थे नहीं कि पकड में आ सकें। वे तो थे–स्वर्ग के देवी-देवता और अप्सरायें, इसलिए वे पकड़ में नहीं आ सके।

अन्त में राजा ने अपने कुलपुरोहित से इस समस्या के समाधान के लिये कुछ करने की प्रार्थना की। कुलपुरोहित ने इसका समाधान बताते हुए कहा कि यदि सायंकाल में उद्यान के सभी पौधों के आसपास, भगवान विष्णु का चरणामृत या भगवान के विग्रह के गले से उतारी हुई प्रसादी माला के फूल या भगवान के चरणों में चढ़े पुष्पों को बिखेर दिया जाये तो सम्भव है कि चोरों को पकड़ा जा सकेगा। राजा ने वैसा ही किया।

रात्री होने पर स्वर्ग के देवी-देवता एवं अप्सरायें रोज़ की तरह उस उद्यान में उतर आयीं। उनमें से एक अप्सरा का पाँव पौधों के आस-पास बिखरे भगवान के चरणों में चढ़े पुष्पों के ऊपर जैसे ही पड़ा उसके सारे पुण्य उसी समय समाप्त हो गये। उसकी वापस स्वर्ग जाने की सारी शक्ति भी खत्म हो गई। अन्य देवता व देवियाँ पहले तो उसे देखते रहे परन्तु उसे साथ ले जाने का कोई उपाय न देख हताश होकर, उसे उसी असहाय अवस्था में छोड़ कर वापस स्वर्ग में चले गये, वह बेचारी अकेली रह गई क्योंकि पुण्यों के समाप्त हो जाने से वह उडान नहीं भर सकी तथा वापस स्वर्ग नहीं जा सकी। अपने साथियों से बिछुड़ जाने पर तथा इस मृत्युलोक में व्याप्त जरा, व्याधि आदि दुखों के बारे में सोच-सोच कर कि हाय, मुझे अब इस मृत्युलोक में रहना पड़ेगा, दुखी होकर रोने लगी।

प्रातः होते ही उद्यान के चौकीदारों व मालियों ने उसे देखा तो वे उसके दिव्य तेज व अद्वितीय रूप को देखकर आश्चर्यचकित हो गये। उन्होंने राजमहल में जाकर राजा को खबर दी। राजा वहाँ आया व उसने भी उस अप्सरा को देखा। उसके अलौकिक रूप को देखते ही वह उसके प्रति दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती आदि देवियों की कल्पना कर बैठा तथा इसी भावना से राजा ने उसे नमस्कार किया।

अप्सरा को रोते हुए देखकर राजा को बड़ी दया आई। राजा ने पूछा – देवी! आप क्यों रो रही हैं? आपको क्या कष्ट है?

अप्सरा और राजा रुक्मांगद के बीच वार्तालाप

उस अप्सरा ने सारा वृतान्त कह सुनाया और कहा कि मैं स्वर्ग वापस जाना चाहती हूँ क्योंकि मनुष्य-लोक में बुढ़ापा बहुत जल्दी आ जाता है। शरीर रोगग्रस्त हो जाता है। विषय भोग भी इच्छानुसार भोगे नहीं जा सकते। महाराज! यदि आपकी प्रजा का कोई भी स्त्री अथवा पुरुष मुझे अपनी एक एकादशी का फल दान दे देगा तो मैं वापस जा सकती हूँ। एक एकादशी के फल से मैं एक कल्प काल तक स्वर्ग का दिव्य सुख भोग सकती हूँ।

राजा रुक्मांगद को एकादशी के बारे में कुछ भी पता नहीं था। उसने अपने राजगुरु

से पूछा तो उन्होंने भी अनभिज्ञता प्रकट की और कहा इस एकादशी व्रत के बारे में मैं आज ही सुन रहा हूँ। जब कुलगुरु को ही पता नहीं तो भला प्रजा को कैसे पता होता। राजा ने अपने नगर में ढिंढोरा पिटवा दिया कि जो नागरिक एक एकादशी व्रत का फल देगा उसको ईनाम दिया जायेगा। जब तीन-चार दिन तक कोई भी नागरिक आगे नहीं आया तो ईनाम की राशि बढ़ाते-बढ़ाते आधे राज्य तक कर दी किन्तु अनुकूल परिणाम नहीं आया तो अप्सरा ने मन ही मन यमराज के गणक चित्रगुप्त को स्मरण किया। चित्रगुप्त जी की प्रेरणा से अप्सरा को मालूम पड़ा कि राजा के राज्य में एक सेठ है जिसकी स्त्री ने एक बार मज़बूरी से एकादशी व्रत किया था।

सेठ का पता व परिचय बताते हुए अप्सरा ने राजा को उस सेठ के बारे में कहा कि एक दिन यूँ ही उस सेठ की स्त्री वैसे ही घूमते-घूमते अपने घर के पास ही एकांत में बने गोदाम में वहाँ रखे सामान को देखने चली गयी, सेठ के नौकरों को मालूम न था की सेठानी अन्दर गोदाम में है। वे तो सेठ के बुलाने पर गोदाम के दरवाज़े का ताला लगा कर चले गये।

नौकर तो चले गये परन्तु सेठानी वहीं बन्द रह गयी उसने काफ़ी दरवाज़ा पीटा पर उस एकान्त में किसी ने वह आवाज़ न सुनी। परेशान सेठानी क्या करती; रात में वहीं सो गयी, यह सोचकर कि सुबह कोई तो गोदाम खोलेगा, परन्तु सेठानी का भाग्य ऐसा कि अगले दिन दुकान की छुट्टी थी। सो गोदाम की तरफ कोई आया ही नहीं। भूख प्यास से सेठानी व्याकुल हो गयी। इधर सेठ और उसके घरवाले सभी परेशान, उन्होंने बहुत ढूँढा पर मिलती कैसे, वह वहाँ थी ही नहीं। गोदाम की तरफ़ किसी का ध्यान नहीं गया क्योंकि सेठानी वहाँ जाती ही नहीं थी। उस दिन तो वह यूं ही कौतूहल-वश चली गयी थी।

छुट्टी से अगले दिन जब सेठ के नौकरों ने किसी सामान के लिये दरवाज़ा खोला तो अन्दर बेहोशी की हालत में सेठानी को गिरा पाया। ये खबर तुरन्त सेठ को दी गयी। सेठ पडोस के वैद्य को साथ ले आया। पानी का छींटा मारकर व उसके हाथ-पैरों की मालिश करके उसे होश में लाया गया तथा उसके लिये भोजन की व्यवस्था की गयी। धीरे-धीरे सेठानी अपने को स्वस्थ अनुभव करने लगी। संयोग से जिस दिन सेठानी

गोदाम देखने गयी, वह दशमी तिथि थी व उसके अगले दिन एकादशी। इस तरह उस सेठानी के द्वारा अनजान में परम पवित्र एकादशी का व्रत हो गया।

अप्सरा से पूरी बात सुनकर राजा ने अपने मन्त्री व सैनिकों को उस सेठ को व उसी स्त्री को ससम्मान लिवा लाने को कहा। सेठ-सेठानी के आने पर उन्होंने राजा को व उस अप्सरा को प्रणाम किया और कहा कि आपके मन्त्रियों ने हमें सारी बात बता दी है, अब आप आज्ञा करें कि हमें क्या करना होगा।

अप्सरा ने सेठानी से कहा कि यदि आप कृपा करके अपने इस व्रत का फल मुझे संकल्प पढ़कर दान दे दोगी तो मैं इस व्रत के पुण्य के प्रताप से स्वर्ग वापस जा सकती हूँ। तब राजा ने अपने राजगुरु के द्वारा सेठानी से संकल्प करा कर स्वर्ग की देवी को दिला दिया तो वह देवी राजा व सेठ-सेठानी को धन्यवाद व सभी का आभार प्रकट करती हुई स्वर्ग को चली गई। राजा ने अपनी घोषणा के अनुसार सेठानी को अपना आधा राज्य दे दिया। महाराज रुक्मांगद को इस घटना को प्रत्यक्ष देखने से पूर्ण विश्वास हो गया कि एकादशी का बहुत महात्म्य है, इसकी बहुत महिमा है। एक दिन राजा ने यह विचार किया कि इतनी पुण्यदायिनी और कल्याणकारी एकादशी का व्रत मेरे राज्य के प्रत्येक नागरिक को अवश्य ही करना चाहिए। अतः उसने इसे नियमित रूप से लागू कर दिया।

राजा ने कहा–

अष्टवर्षाधिको मर्त्यो ह्यशीतिर् नैव पूर्यते।
यो भुङ्क्ते मामके राष्ट्रे विष्णोरहनि पापकृत्॥
स मे वध्यश्च निर्वास्यो देशतः कालतश्च मे।
एतस्मात् कारणाद् विप्र एकादश्यामुपोषणम्।
कुर्यान्नरो वा नारी वा पक्षयोरुभयोरपि॥

(नारदीय पुराण)

अर्थात् जिनकी उम्र आठ वर्ष से अधिक अथवा अस्सी साल से कम है, ऐसा कोई व्यक्ति यदि मेरे राज्य में एकादशी के दिन अन्न-भोजन करेगा तो मैं उसको मृत्यु दण्ड दूँगा या फिर मैं उसे अपने राज्य से निकाल दूँगा। इसलिए स्त्री हो या पुरुष, सभी को

शुक्ल एवं कृष्ण पक्ष की दोनों एकादशी तिथियों में उपवास जरूर करना होगा। यह नियम मेरे पुत्र, पिता-माता, पत्नी, मित्र, रिश्तेदार कोई भी हों, सभी के लिये लागू होगा। न करने पर सभी को दण्ड दूँगा। इस प्रकार की घोषणा, राजा ने अपने पूरे राज्य में ढिंढोरा पिटवां कर करा दी। राजा के इस आदेश को मानते हुए उस राज्य के सभी लोग एकादशी व्रत पालन करते हुए वैकुंठ को जाने लगे।

ब्रह्मपुराण में लिखा है कि यह एकादशी बहुत पुण्य देने वाली है। महापाप नाश करने वाली है। अनन्त फल देने वाली है। ब्रह्म-हत्या, गोहत्या, भ्रूणहत्या, पर-स्त्री-गमन, झूठ बोलना, झूठी गवाही देना, किसी की झूठी प्रशंसा करना, कम तोलना, वेद पढ़ने व पढ़ाने के नाम पर दूसरों को ठगना व काल्पनिक ग्रन्थ लिखना आदि बहुत से बड़े-बड़े पाप इस व्रत से समाप्त हो जाते हैं।

ठग, झूठे-ज्योतिषी व झूठे डाक्टर भी झूठी गवाही देने के समान पापी हैं परन्तु ये व्रत इन सब दोषों को समाप्त कर देता है। यदि क्षत्रिय अपने क्षत्रिय धर्म को त्यागकर युद्ध से भाग खड़ा होता है अथवा कोई शिष्य अपने गुरु से दीक्षा लेकर भ्रमवश फिर उसी गुरु की निन्दा करने लग जाता है तो उसे जो पाप लगते हैं, वे सभी इस एकादशी के व्रत को पालन करने से नष्ट हो जाते हैं।

हे राजन्! इस एकादशी की महिमा इतनी है कि पवित्र कार्तिक मास में तीन दिन प्रयागराज में स्नान करने का, मकरराशि में जब सूर्यदेव अवस्थान कर रहे हों, ऐसे माघ मास में गंगा, यमुना व सरस्वती के संगमस्थली पर स्नान करने से, काशी में शिवरात्रि का व्रत करने से व गया में विष्णु पादपद्मों में पिण्ड दान करने से जो फल मिलता है, वही फल इस एकादशी के व्रत से अनायास ही मिल जाता है। हे राजन्! यह व्रत पाप रूपी वृक्षों को काटने को तीखी कुल्हाड़ी की तरह, पापों को भस्म करने के लिए दावानल की तरह, पाप रूपी अन्धकार को मिटाने के लिए तेजोमय सूर्य की तरह तथा पाप रूपी मृग के लिए सिंह स्वरूप है। हे राजन्! अपरा एकादशी के दिन श्रद्धापूर्वक यह व्रत करने के साथ-साथ जो त्रिविक्रम भगवान विष्णु जी का अर्चन करता है, उसका परम मंगल होता है व मृत्यु के पश्चात विष्णुलोक को प्राप्त करता है। सिंह राशि में बृहस्पति की स्थिति में गौतमी नदी में स्नान, कुंभपर्व में केदारनाथ जी के दर्शन, बद्रीनाथधाम की

यात्रा, दर्शन और सेवा, सूर्यग्रहण में कुरुक्षेत्र स्नान तथा स्नान के समय हाथी, गाय, घोड़े व सोने तथा भूमि के दान का जो फल है वह सब 'अपरा' एकादशी के पालन से स्वतः ही मिल जाता है, यहाँ तक कि इसका महात्म्य सुनने से भी बहुत पुण्य मिलता है।

इति ज्येष्ठ कृष्ण-पक्षीय 'अपरा एकादशी' महात्म्य समाप्त ।

श्रीएकादशी व्रत – भक्तिका नवाँ अंग

श्रीभक्तिरसामृतसिन्धुबिन्दु ग्रंथमे भक्ति के चौसठ अंगो का वर्णन किया गया हैं। **श्रीएकादशी व्रत** भक्तिका नवाँ अंग हैं। शुद्धा एकादशीका नाम हरिवासर है । विद्धा एकादशीका त्याग करना चाहिए। महाद्वादशी उपस्थित होने पर एकादशी छोड़कर महाद्वादशीका पालन करना चाहिए। पूर्व दिन ब्रह्मचर्य, हरिवासरके दिन निरम्बु उपवास और रात्रि जागरणके साथ निरन्तर भजन और उपवासके दूसरे दिन ब्रह्मचर्य और उपयुक्त समय पर पारण करना ही हरिवासरका सम्मान करना है। महाप्रसाद त्याग किये बिना निरम्बु (जलरहित) उपवास नहीं होता। सामर्थ्यहीन अथवा शक्तिहीनकी अवस्थामें प्रतिनिधि या अनुकल्पकी व्यवस्था है – 'नक्तं हविष्यान्नं' (हरिभक्तिविलास 12/39 धृत वायुपुराण) वचनोंके द्वारा अनुकल्पकी विधि है। प्रतिनिधिके द्वारा उपवासकी विधि हरिभक्तिविलास 12/34 दी गयी है।

उपवासेत्वशक्तस्य आहिताग्नेरथापि वा।
पुत्रान् वा कारयेदन्यान् ब्राह्मणान् वापि कारयेत्॥

अर्थात् साग्निक ब्राह्मण उपवास करनेमें असमर्थ होने पर पुत्रों द्वारा अथवा ब्राह्मणों द्वारा उपवास करवायेंगे।

हविष्यान्न आदि द्वारा उपवासकी विधि हरिभक्तिविलास 12/39 धृत वायुपुराणमें है – *"नक्तं हविष्यान्नमनोदनम्बा फलं तिलाः क्षीरमथाम्बुचाज्यं। यत् पञ्चगव्यं यदि वापि वायुः प्रशस्तमत्रोत्तरमुत्तञ्च॥"* अर्थात् रातमें हविष्यान्न-अन्न छोड़कर दूसरे-दूसरे द्रव्य फल, दुग्ध, जल, घृत, पञ्चगव्य अथवा वायु–ये सब वस्तुएँ क्रमशः एकसे दूसरी श्रेष्ठ है। महाभारत उद्योग पर्वके अनुसार जल, मूल, फल, दुग्ध, घृत, ब्राह्मण कामना, गुरुवचन और औषधि – इन आठोंसे व्रत नष्ट नहीं होता –*"अष्टैतान्य-व्रतह्नानि आपो मूलं फलं पयः। हविर्ब्राह्मिणकाम्य च गुरोर्वचनमौषधम्॥"*

हरिवासरसे एकादशी तथा जन्माष्टमी, रामनवमी, नृसिंह-चतुर्दशी, गौरपूर्णिमा आदि वैष्णव व्रतोंको भी पालन करना चाहिए। चारों वर्ण और चारों आश्रमके स्त्री-पुरुष, सबके लिए एकादशी पालनका विधान हरिभक्तिविलासमें दिया गया है। स्त्रियोंमें विधवा और सधवा सबके लिए एकादशी पालनीय है। एकादशीके दिन अन्नभोजनसे गोमाँस भोजनका पाप लगता है। प्रत्येक माहकी दोनों पक्षोंकी एकादशीका विधिवत् पालन करना चाहिए।

सपुत्रश्च सभार्यश्च स्वजनैर्भक्तिसंयुतः।
एकादश्यामुपवसेत् पक्षयोरुभयोरपि॥

(हरिभक्तिविलास 12/19)

यहाँ स्वभार्याका तात्पर्य पत्नीके साथ व्रतका पालन करनेका विधान दिया गया है। इसके द्वारा सधवा स्त्रियोंको भी एकादशी व्रतपालन करनेका विधान दिया गया है। एकादशी व्रत नित्यव्रत है, इसका पालन नहीं करनेसे दोष होता है ''अत्र व्रतस्थ नित्यत्वादवश्यं तत् समाचरेत्।'' बल्कि दूसरे-दूसरे कामना-मूलक उपवास ही सधवा स्त्रियोंके लिए निषिद्ध हैं, एकादशी नहीं।

श्रीश्रीचैतन्य-शिक्षामृत ग्रंथमे श्रील भक्तिविनोद ठाकुरने लिखा हैं– "भगवत्-सेवाके पूर्व जल ग्रहण करना, भगवानको अनिवेदित द्रव्योंको ग्रहण करना, श्रीमूर्त्ति और उसकी सेवादिका नित्य दर्शन न करना, अपनी प्रियवस्तु और कालोचित स्वादिष्ट फलादि द्रव्य भगवानको अर्पण न करना, हरिवासर एकादशी या भगवानके जन्म-दिवस आदिका पालन न करना-ये सभी कार्य निष्ठा अभावके अन्तर्गत हैं।"

एकादशी के दिन प्रयोग करने योग्य मंजन

प्रायः मसूडें कमजोर होनेसे दात गिर जाते है। इससे बचनेके लिए 100 ग्राम फिटकरी की पावडर, 50 ग्राम सेंधा नमक और 2 चम्मच शुद्ध हल्दी (घरमें जड़ से कूटकर बनायी हुई) – इन तीनों को मिलाकर एक डिब्बी में भर लें। सुबह और रातमें उँगली के द्वारा दाँत और मसूड़े साफ करनेसे सौ साल तक दाँत मजबूत रहेंगे तथा मसूड़ों से खून आना बंद हो जायेगा।

एकादशी के दिन प्रयोग करने योग्य प्राकृतिक साबुन पावडर

100 ग्राम मुलतानी मिट्टी, 100 ग्राम सिकेकाई पावडर, 100 ग्राम अरीठा (Soap Nut) पावडर—उपरोक्त तीनों को मिलाकर एक डिब्बी में भर लें। शौच के बाद तथा नहाते समय इसका प्रयोग करनेसे प्राणीयोंके चरबी से बने हुए साबुनोंसे बचा जा सकता हैं।

एकादशी के दिन प्रयोग करने योग्य प्राकृतिक शैंपू

1 लीटर शुद्ध जल, 20 निंबु का रस, 2 चम्मच सिकेकाई पावडर, 2 चम्मच अरीठा (Soap Nut) पावडर, 1 चम्मच आमला पावडर—इस सामग्री को मिलाकर एक बोतल में संग्रहित करें। इससे केश धोने से केश लंबे और सघन होंगे।

श्रीगुरुवर्ग के एकादशी संबन्धित अनमोल वचन

कम खाओ और अधिक जप करो

हमें इस तरह एकादशी का पालन करने का प्रयास करना चाहिए– कई बार पानी, जूस, फल, या दूध लेकर नहीं। यदि आप युवा और स्वस्थ हैं, तो आप बिना कुछ लिए भी – यहां तक कि पानी के बिना पूरा दिन और पूरी रात बीता सकते हैं। यदि आप ऐसा नहीं कर सकते हैं, तो आप दोपहर या शाम को एक बार खा या पी सकते हैं। यदि आप बीमार या कमजोर हैं, तो आप अपने जीवन को बनाए रखने के लिए दिन में दो बार थोड़ा खा सकते हैं ताकि आप "हरे कृष्ण, हरे कृष्ण" का जाप कर सकें।

पश्चिमी भक्तों के लिए अधिक रियायतें दी गयी हैं क्योंकि कुछ भक्त शरीर में कमजोर हैं। बाकी भक्त बहुत मजबूत हैं। मैंने कई पश्चिमी भक्तों को, खासकर महिलाओं को, पूरे दिन और रात बगैर सोये उपवास करते देखा हैं।

एकादशी के पालन से बहुत सारे फायदे होते हैं। कॉलेजों, अस्पतालों, और काम के विभिन्न स्थानों में छात्रों और श्रमिकों के लिए सप्ताह में एक बार छुट्टी दी जाती हैं, ताकि वो आराम ले सकें और अगले दिन वे पूरी ऊर्जा के साथ काम कर सकें। अन्यथा, वे उनकी गतिविधियों अनेक वर्षोंतक जारी रखने में सक्षम नहीं होंगे। उन्हें कुछ आराम लेने की सख्त जरूरत हैं।

यह हमारे पेट के बारे में भी सच है। हमारे पेट में बैक्टीरिया होते हैं जो हमारे स्वास्थ्य के लिए सहायक होते हैं । ये जीवाणु हमेशा हमारे पाचन के लिए काम करते रहते हैं। यदि वे बीमार हो जाएँगे या थक जाएँगे, तो आप भी बीमार हो जाएँगे। उन्हें कम से कम एक दिन के लिए आराम देने के लिए हमें प्रयास करना चाहिए ताकि अगले दिन वे महान ऊर्जा के साथ फिर से काम कर सकेंगे।

दूसरी बात यह की, आप देख सकते है की विशेष रूप से एकादशी से पूर्णिमा तक सागर में बहुत बड़ी लहरें उठती हैं। इसका कारण यह है की चंद्रमा इस ग्रह के सभी पानी को आकर्षित करता है । जहाँ जहाँ पानी है, चाँद उसे आकर्षित करता है। हमारे शरीर में ज़्यादा पानी है, विशेष रुपसे एकादशी के दिन चंद्रमा इसे आकर्षित करता है। यदि कोई बीमारी है, तो यह बहुत वृद्धि को प्राप्त होगी। यह बेहतर होगा कि हम इन चीजों से परहेज करें। विशेष रूप से अनाज, मक्का, गेहूँ, और उनसे बने भोजन का त्याग करें।

यह भी कहा गया है की कभी-कभी आप पानी पी सकते हैं; उस से कोई नुकसान नहीं होगा। यदि आप एक पत्थर पर पानी डालते हैं, तो पत्थर तुरंत फिर से शुष्क हो जाएगा; सब पानी गायब हो जाएगा। दूसरी ओर, आप यदि कुछ कपास या सोख्ता काग़ज़ (Blotting Paper)पर पानी डालते है, तो वे पानी सोख लेंगे और सुखाने के लिए घंटे लगेंगे।

अनाज, गेहूँ, चावल, मक्का, और दाल से बनाये हुये व्यंजन हमारे पेट में कपास की तरह हैं। चाँद उन से पानी को आकर्षित करता है, जिस कारण रोगों की वृद्धि होती है। कई लोग एकादशी से पूर्णिमा और एकादशी को अमावस्या के बीच अस्पतालों में मर जाते हैं। रोगों को नियन्त्रित करने के लिए एकादशी का पालन करना आवश्यक है।

[श्रील गुरुदेव के 5 जून, 1998 के एकादशी व्याख्यान से उद्धृत: एकादशी के दिन चंद्रमा पृथ्वी के क़रीब आता है, और इसलिए वह हर जगह से – समुद्र, नदियों, हमारे शरीर इत्यादि से पानी को आकर्षित करता है। यदि इस दिन कोई अन्नग्रहण करता है, तो वह अन्न सोख्ता काग़ज़ की तरह बन जाता हैं। आप पानी पीते हैं, तो वह बहुत जल्द ही शरीर से गुजर जाता है। हालांकि, यदि आप एक साथ अनाज और पानी लेने हैं तब

वह अनाज सोख्ता कागज़ या कपास की तरह बनकर पानी को पकड़ कर रखता है।

भले ही आप कपास निचोड़ ले, कुछ पानी रहता ही है। इसी प्रकार यदि आप अनाज खाते हैं, तो वह यह एक स्पंज की तरह हो जाता है। वह बहुत पानी संग्रहित करेगा। चंद्रमा पानी को आकर्षित करेगा, और आप के सभी रोगों में वृद्धि होगी। तुम समुद्र या महासागर में यह देख सकते हो; इस समय वहाँ उच्च ज्वार होता हैं और लहरें बहुत अधिक हो जाती है।]

ये सब शरीर के संबन्धित बाह्य कारण हैं। अपने शरीर से जो लोग आसक्ति रखते हैं, उनके फायदे के लिए मैंने उनका उल्लेख किया है।

जो व्यक्ति भगवान में विश्वास नहीं रखते है, उन्हें भी एकादशी का पालन करना चाहिए। भारत में सभी प्रकार के भक्त एकादशी का पालन करते हैं – मायावादी (निर्विशेषवादी), शैव (भगवान शिव के उपासक), शाक्त (दुर्गा देवी के उपासक), और गणेश भक्त भी इसका पालन करते हैं। महिलाएँ, पुरुष और बच्चे भी इसका पालन करते हैं, लेकिन आजकल यह प्रवृत्ति कम हो रही है। लगभग हर कोई एकादशी से परहेज करने लगा है; जैसे की पश्चिमी देशों से एक बहुत बड़ा तूफान भारत में गया हों और हर जगह को प्रभावित किया हों।

यदि आप अंबरीष महाराज या कृष्ण के माता-पिता – नंद और यशोदा की तरह भक्त बनना चाहते हैं, तो आपको एकादशी का पालन अवश्य करना चाहिए। नंद और यशोदा ने वृन्दावन में एकादशी का पालन किया, और वृन्दावन से वे मथुरा के पास अंबिका-कानन गये और वहाँ एकादशी का पालन किया। उन्होंने ऐसा किया था, तो क्या हमें नहीं करना चाहिए? हमें बड़ी सावधानी से एकादशी का पालन करना चाहिए। फिर, भक्ति अविवेचित रुपसे हमारे पास आ जाएगी।

हम शुद्ध वैष्णवों के मार्गदर्शन में एकादशी का पालन करें और कीर्तन का अनुष्ठान करें। यदि कोई भक्ति करता है तो ठीक है। लेकिन यदि वह एक ऐसे भक्त के आनुगत्य में भजन करता हैं जिसका व्रज से रिश्ता है, जिस में व्रज-भक्ति हैं और जो रसिक हैं, तो ऐसा भक्त उसके संदेहों को दूर कर सकता हैं और राधा, कृष्ण तथा महाप्रभु उसके दिल में स्थापित कर सकता हैं। हमेशा इस क्षमता के वैष्णव के मार्गदर्शन में वृन्दावन रहें

और हमेशा मंत्र-जप करें और भगवद्-स्मरण करें । साथ ही कृष्ण के पवित्र नाम का जप करें और उस नाम से संबधित लीलाओंका स्मरण करें।

श्यामराणी दासी: गुरुदेव, हम हमेशा सुनते है की हमें एकादशी के दिन अनाज नहीं लेना चाहिए, क्यों की उस दिन उन में पाप जमा हो जाते है, लेकिन टमाटर और लौकी की जैसी कुछ सब्जियां हम क्यों नहीं ले सकते?

श्रील नारायण गोस्वामी महाराज: यह अनाज के समान नहीं है। उनमें अनाज, मक्का, गेहूँ, और दाल के गुण नहीं हैं [यानी वे सोख्ता कागज़ या कपास की गेंद के तरह बर्ताव नहीं करते हैं।] हमें एक विशेष कहानी से पता है कि एकादशी के दिन ब्रह्म-हत्या (एक ब्राह्मण की हत्या), मातृ-हत्या (अपने मां की हत्या), और गोहत्या (एक गाय की हत्या) सहित सभी पाप अनाज और अनाज से तैयार किये हुए व्यंजनों में आश्रय लेते हैं। इसके अलावा, शास्त्र कुछ सब्जियां और अन्य खाद्य पदार्थों के खाने पर प्रतिबंध लगाता है।

पश्चिमी भक्तों और भारत के कमजोर व्यक्तियों के लिए एक रियायत दी गयी है। यदि आप विधि-निषेधोंका पालन नहीं कर रहे हैं, आपको सब पापों का भागी बनना पड़ेगा। यदि आपके पास कुछ भक्ति है, तो वह नष्ट हो जाएगी।

आप सभी आज एकादशी का पालन कर रहे हैं। हमें निश्चित रूप से एकादशी का पालन करना चाहिए – सभी प्रकार के अनाज जैसे गेहूँ, जौ, इत्यादि से तैयार किये हुए व्यंजन – ये सभी का सख्ती से परहेज करना चाहिए। यदि आप एकादशी का पालन करते, भगवान के पवित्र नाम का जप करते हैं, श्रेष्ठ साधु-संग में हरि-कथा श्रवण करते हैं, उन्नत भक्तों का संग करते हैं और भक्ति के नौ अंगों में से किसी भी अंग का पालन करते है, आप का कभी भी पतन नहीं होगा।

कमजोर व्यक्ति पसंद के अनुसार कुछ ले सकते हैं, लेकिन यह एकादशी के लिए अनुज्ञप्त खाद्य पदार्थोंमे से ही होना चाहिए। बच्चे भी अपनी पसंद से कुछ खा सकते हैं, लेकिन उनकी मां और पिता को ध्यान रखना चाहिए की बच्चे केवल फल और एकादशी के लिए आवंटित अन्य खाद्य पदार्थ ही खायें।

कभी कभी, कलियुग और माया के कारण हम कमजोर हो जाते हैं और पालन नहीं कर सकते हैं; यही वजह है कि हम अध:पतित होते हैं। किसी भी स्थिति में, हम मंत्र का जप, कृष्ण का स्मरण और एकादशी व्रत का पालन – इन्हें भूलना नहीं चाहिए। भले ही आप कमजोर हों, इन सिद्धान्तों का पालन करने के लिए प्रयास करें।

इसके अलावा एकादशी पालन करने का सबसे महत्त्वपूर्ण कारण यह हैं की एकादशी स्वयं कृष्ण का रूप है। कृष्ण एकादशी बन गये हैं। वे एकादशी के दिन इस दुनिया में अवतरित होते है। जो लोग एकादशी व्रत पालन कर रहे हैं, भगवान् उनकी स्वयं देखभाल करते हैं और उन्हें विशेष दया प्रदान करते है। इसलिए हमें एकादशी का पालन करना चाहिए।

एकबार एकादशी के दिन श्री चैतन्य महाप्रभु अपने परिकर – स्वरूप दामोदर, राय रामानन्द, नित्यानन्द प्रभु और अन्य हज़ारों भक्तों के साथ पुरी में थे। वे एक पल भर भी सोये बिना कृष्ण का स्मरण और हरि-कथा श्रवण करते हुए अहोरात्र कीर्तन कर रहे थे। इस बीच में शाम को लगभग 8:00 बजे जगन्नाथ पुरी के पंडे (पुजारी) बड़ी मात्रा में स्वादिष्ट, मधुर महा-प्रसाद ले आये और उसे महाप्रभु और उनके भक्तों के सामने रखा।

पुराणों और अन्य शास्त्रों में लिखा गया है की यदि कोई महा-प्रसाद प्राप्त करता है तो एक पल की देरी के बिना उसका सेवन करना चाहिए। जब चैतन्य महाप्रभु ने महा-प्रसाद को देखा, वे अत्यधिक प्रसन्न हो गये। उन्होंने विभिन्न तरीकों से उस महा-प्रसाद की प्रार्थना और रात भर उसकी परिक्रमा की। उन्होंने शास्त्र से कई श्लोक उद्धृत किये और उनकी व्याख्या करते हुए उन्होंने बताया था की सूअर, कौवे, और कुत्तों द्वारा लिया हुआ महा-प्रसाद भी महा-प्रसाद ही है। वह इतना शक्तिशाली है। हमें उसका अनादर नहीं करना चाहिए; बल्कि, हमें उसे लेना चाहिए। यदि वह सड़ा या सूखा हो, दूर स्थानों से लाया गया हो, तो भी हमें उसका सम्मान करना चाहिए।

जब सुबह हो गयी, तो महाप्रभु ने उनके सभी परिकरों के साथ समुद्र में स्नान किया, और फिर उन से कहा, "अब इस प्रसाद को हम विभाजित करें और फिर उसे आदरपूर्वक ग्रहण करे।"

एकादशी के दिन , अन्न स्वीकार न करके हमें एकादशी का सम्मान करना चाहिए। एकादशी कृष्ण-भक्ति, प्रेम और स्नेह की जननी है। यदि आप एकादशी का पालन नहीं करते हैं, तो कृष्ण-भक्ति कभी भी नहीं आएगी।

अगर आप युवा और सशक्त हैं, तो आप फल, सब्जियां, रस, यहां तक कि पानी भी न लेकर, सब दिन उपवास कर सकते हैं। यदि आप इतने सशक्त नहीं है, या यदि आप बीमार या वृद्ध हैं, तो आप कुछ फल, थोड़ा रस या दूध ले सकते हैं।

एक दिन में तीन या चार बार बड़ी मात्रा में रस, एक या दो किलो मीठी रबड़ी या अन्य खाद्य पदार्थ मत लो। सिर्फ अपने जीवन को बनाए रखने के लिए बहुत कम लेना चाहिए। हमें दिन के दौरान बिलकुल सोना नहीं चाहिए और श्रील हरिदास ठाकुर की तरह जप करना चाहिए; तो एकादशी का फल प्राप्त होगा।

इन्दुलेखा दासी की भतीजी: कल पहली बार मैंने एकादशी का पालन किया । हालांकि मैंने ये मेरी माँ के लिए किया क्योंकि उसकी जीवनयात्रा लीवर कैंसर से समाप्त होनेवाली है।

श्रील नारायण महाराज: यह अच्छा है। एक बार सडक पर पड़ी हुई गाय मर रही थी। उसका शरीर तड़प रहा था, लेकिन उसके प्राण उसके शरीर से बाहर नहीं जा रहे थे।

मेरी एक शिष्या ने उसको देखा और कहा, "हे गोमाता, मैं तुम्हें एक एकादशी का फल दे रही हूँ। अब आप बहुत आसानी अपने प्राण त्यागने में सक्षम होगी।" तुरंत, बिना किसी देरी के, गाय ने शरीर छोड़ दिया।

पिछले साल, नंद-गोपाल के घोड़ों में से एक घोडा मर रहा था, साथ ही उसके प्राण

शरीर से बाहर नहीं जा पा रहे थे । मैंने उसके कान में "हरे कृष्ण" कहा, और उसने आसानी से प्राण छोड़ दिया । यह जप चमत्कारी और बहुत शक्तिशाली है।

राम-तुलसी दासः क्या एकादशी-देवी स्वयं राधिका है?

श्रील नारायण महाराजः एकादशी राधिका नहीं है, लेकिन उसे राधिका का एक प्रकाश माना जा सकता है। कृष्ण स्वयं एकादशी बन गये है। एकादशी और कृष्ण एक ही हैं, राधा और कृष्ण एकही है, इसलिए यह कहा जा सकता है एकादशी राधिका की अभिव्यक्ति (या प्रकाश) हैं।

श्रीमती राधिका जो ह्लादिनी-शक्ति-स्वरूपा (कृष्ण के सर्वोच्च आनंद-प्रदायिनी शक्ति का सार) है, एकादशी से अधिक है। गोलोक वृन्दावन में एकादशी का कोई पालन नहीं करता। एकादशी का पालन इस भौतिक संसार में साधन भक्ति में रत जनों के लिए ही है। गोलोक वृंदावन में श्रीमती राधिका कृष्ण की सर्वोच्च शक्ति है, तो उसमे और एकादशी में कुछ अंतर हैं।

[नोटः कोई तर्क कर सकता है की नंद महाराज ने एकादशी का पालन किया, और वे तो गोलोक वृन्दावन के निवासी है। वास्तव में नंद महाराज केवल प्रकट वृन्दावन में ही एकादशी का पालन करते है। यह भौम वृन्दावन इस दुनिया में प्रकट हुआ हैं और एक साधना-भूमि हैं। उन्होंने केवल दुसरों को सिखाने के लिए ऐसा किया। (श्रीपाद भक्तिवेदान्त माधव महाराजा)]

श्रीपाद नेमी महाराजः यदि वास्तव में हमने किसी कारणवश बाकी एकादशीयों का पालन नहीं किया हो, तो (पाण्डव) निर्जल एकादशी का पालन करने से क्या हम क्षतिपूर्ति (कमी पूरी)कर सकते है?

श्रील नारायण गोस्वामी महाराजः मैंने अभी इसका जवाब दिया है। आप केवल

हरिनाम के द्वारा क्षतिपूर्ति कर सकते हैं, केवल उचित रीति से (पाण्डव) निर्जल एकादशी का पालन करके नहीं। आप को हर एकादशी का पालन करना होगा। केवल भीम के लिए ही यह रियायत दी गई थी।

बलराम दास: क्या हमको निर्जल एकादशी पर अपने दांत साफ करना चाहिए?

श्रील नारायण महाराज: क्यों नहीं? क्या आपको स्नान नहीं करना चाहिए? (जिस तरह स्नान आवश्यक हैं, उसी तरह दांत साफ करना भी आवश्यक हैं।)

बलराम दास: स्नान में पानी पिया नहीं जाता।

श्रील नारायण महाराज: लेकिन किसी भी तरह पानी आपके शरीर में प्रवेश रहा हैं। बेशक आपको स्नान करना चाहिए, लेकिन उस दिन चरणामृत नहीं लेना चाहिए; केवल चरणामृत को प्रणाम करना चाहिए।

श्रील नारायण गोस्वामी महाराज: वे भीम नहीं हैं। प्राचीन काल से श्री रूप, श्री सनातन आदि छ: गोस्वामीयों के समय तक भक्त लोग सभी एकादशीयोंका अनुष्ठान जल लिए बगैर निर्जला एकादशी तरह ही करते थे।

अंबरीष महाराज प्रत्येक एकादशी का अनुष्ठान तीन दिनों तक करते थे। पहले दिन वह अपने आहार को नियन्त्रित करते थे, दूसरे दिन वे खाने और पीने से परहेज करते थे और तीसरे दिन वे केवल एक बार ही खाते थे।

श्रील नारायण गोस्वामी महाराज : भारत में हर एकादशी का पालन आम तौर पर भोजन या पानी के बिना किया जाता है। पूज्यपाद श्रील भक्तिवेदान्त स्वामी महाराज ने देखा की पश्चिमी भक्त कुछ हद तक कमजोर थे, इसलिए उन्होंने उनके लिए रियायत का सूत्रपात किया।

उन्होंने कहा कि वे दिन में तीन बार अनुकल्प[7] ले सकते है। हालांकि, अनुकल्प ग्रहण करने के बजाय, वे बृहत्-कल्प (बृहत्-फलाहार) ले रहे हैं। जितना वो खा-पी सकते हैं, उतनी मात्रा में फलाहार ले रहे है। क्या आप समझे? यह अच्छा नहीं है।

7 सिर्फ अपना जीवन बनाए रखने के लिए थोड़ा फलाहार।

यशस्विनी दासी: यदि कोई व्यक्ति निर्जला[8] एकादशी करते हुए आपके प्रसाद के अवशेष को खाती है तो क्या उससे उसकी एकादशी टुट जाती हैं?

श्रील नारायण गोस्वामी महाराज: हाँ।

श्रीपाद माधव महाराज: आप श्रील गुरुदेव का उच्छिष्ट प्रसाद अलग रखकर निर्जला एकादशी के बाद वाले दिन भी खा सकते हैं। [इससे निर्जला एकादशी व्रतकी भी रक्षा होगी और भक्त गुरुदेव के प्रसाद का भी सम्मान कर रहा है।]

भक्त: मैंने कुछ अपराध किये है।

श्रील नारायण गोस्वामी महाराज: अपराध मत करो. यदि आप अपने जप बढा दोगे तो, अपराधोंका विनाश हो जायेगा।

एकादशी व्रत पारण का नियम

यदि एकादशी व्रत का पालन निर्जला किया हो, तो चरणामृत द्वारा पारण करें, अगर फलाहार किया हो तो अन्न-प्रसाद द्वारा पारण करें। समय पर पारण करने से एकादशी व्रत सम्पूर्ण होता है। महाद्वादशी उपस्थित होने पर एकादशी के स्थान पर महाद्वादशी तिथि को ही व्रत पालन करने का नियम है। सभी एकादशी महाद्वादशी पारण का समय आदि का विवरण गौड़ीय वेदान्त प्रकाशन द्वारा प्रस्तुत वैष्णव व्रतोत्सव तालिका में पाया जा सकता है।

अनुकल्प (एकादशी में लेने योग्य खाद्य पदार्थ)

(1) सभी फल (ताजा और सूखे), सूखे-मेवे और उनसे निकाले हुए तेल, पानीफल, सिंघाड़ा, गन्ना, चीनी और गन्ने से बने अन्य पदार्थ। चीनी में गाय, सुअर और कुत्तेके हड्डीके चुरेके मिश्रण की आशंका होने के कारण शुद्ध गुड (मैदे के मिलावट से रहित)

8 निर्जला शब्दमें 'निः' का अर्थ है 'नही' और 'जल' का अर्थ है 'पानी;' पानी के बगैर जो पूर्ण उपवास व्रत रखा जाता है, उसे निर्जला एकादशी कहते हैं।

प्रयोग करना ज़्यादा अच्छा रहेगा।

(2) आलू, शकरकंद, कद्दू, कुम्हडा, खीरा, मूली, स्कॅश, कटहल, नींबू, अवकाडो (मेक्सिको में पैदा होनेवाला नाशपाती जैसा फल), जैतून, नारियल, कुट्टु, सभी शक्कर।

(3) दूध और इस से तैयार सभी पदार्थ। सभी शुद्ध दूध के उत्पाद। चातुर्मास्य (बरसात के मौसम) के दूसरे महीने के दौरान दही से परहेज और तीसरे महीने के दौरान दूध से परहेज।

(4) भारतीय नस्ल की गायों के माखन को धीमी आँच पर गरम करके बनाया शुद्ध घी, मूंगफली का तेल, नारियल तेल, बादाम का तेल।

एकादशी पर इस्तेमाल करने योग्य मसाले

काली मिर्च, ताजा अदरक, शुद्ध सेंधा नमक (समुद्री नमक एकादशी पर प्रयोग नहीं किया जाता है) और ताजी हल्दी (सूखे जड़ों से घर पर पीसी हुई, मैदे के मिलावट के संभावना से रहित)। ये सब नए और स्वच्छ पैकेट से लिए जाए।

एकादशी पर प्रतिबंधित खाद्य पदार्थ

(1) टमाटर, बैंगन, फूल गोभी, ब्रॉकली, शिमला मिर्च, मटर, छोला (चना), सब प्रकार की सेम,लोबिया, राजमा इत्यादि एवं उनसे बने पदार्थ जैसे पापड़, सोयाबीनकी दही, सोयाबीनका दूध, इत्यादि ।

(2) करेला, लौकी, परमल, तोरई, सेम, डंठल, भिंडी, केलेका फूल

(3) सभी प्रकारकी पत्तेवाली सब्जियाँ–पालक, सलाद, पत्ता गोभी, कढ़ी पत्ता, नीम पत्ता इत्यादि

(4) अन्न जातीय–बाजरा, जौं, सूजी, दलिया, चावल, श्यामा चावल, मक्का एवं समस्त प्रकारके आटे जैसे चावलका आटा, चनेका आटा, उड़दकी दालका आटा इत्यादि

(5) अनाज से बने तेल–मक्का का तेल, सरसोंका तेल, तिलका तेल, सोयाबीन तेल, और सामान्य वनस्पति तेल आदि, और इन तेलों में तले हुए पदार्थ, जैसे मूंगफली, काजू, आलूके चिप्स और अन्य प्रकार का हलका नाश्ता।

(6) मक्का या अन्न का माड़ तथा उनसे बनी या मिश्रित वस्तुएँ जैसे – बेकिंग सोडा, बेकिंग पाउडर, कस्टर्ड पावडर, कस्टर्ड, केक, हलवा, क्रीम, मिठाई, साबूदाना इत्यादि।

(7) शहद।

एकादशी के लिए अयोग्य मसाले

हींग, तिल के बीज, जीरा, मेथी, सरसों, इमली, सौंफ, इलायची, कलौंज, जायफल, खसखस, अजवाइन, लौंग, आदि

एकादशी का पालन कैसे करें?

कभी भी माँस, मछली, अंडे, प्याज, लहसुन, गाजर, लाल मसूर, हरी दाल (Green Flat Lentils), मशरूम् (कुकुरमुत्ता) या इनसे बने उत्पादोंको न खायें। एकादशी के दिन चाय, कॉफी, पान, गुटका, खैनी, बीड़ी, सिगरेट, तमाकू से बने पदार्थ, सुपारी, शराब से परहेज करना चाहिए। एकादशी के दिन स्त्रीसंग करनेसे क्षय रोग (ट्यूबर्क्यु'लोसिस, TB) होता हैं।

कूर्म अवतार

भगवान विष्णु के दस अवतारों में कूर्म अवतार दूसरा अवतार हैं। कूर्म अवतार की कहानी इस प्रकार हैं। ब्रह्माने भृगु, मरीचि, अत्रि, दक्ष, कर्दम, पुलस्त्य, पुलह, अङ्गिरा तथा क्रतु - इन नौ प्रजापतियोंकों उत्पन्न किया। महर्षि अत्रि के पुत्र दुर्वासा बडे ही तेजस्वी मुनि हुए। वे महान तपस्वी, अत्यंत क्रोधी तथा संपूर्ण लोकों को क्षोभ में डालनेवाले है।

एक समय की बात है – दुर्वासा देवराज इन्द्र से मिलने के लिए स्वर्गलोक गये। उस समय इन्द्र हाथी पर आरूढ हो संपूर्ण देवताओं से पूजित होकर कहीं जाने के लिए उद्यत थे। उन्हें देखकर महातपस्वी दुर्वासा का मन प्रसन्न हो गया। उन्होंने विनीत भाव से देवराज को एक पारिजात की माला भेट कीं। देवराज ने उसे लेकर हाथी के मस्तक पर डाल दिया और स्वयं नंदनवन की ओर चल दिये। हाथी मद से उन्मत्त हो रहा था। उसने सूँड से उस माला को उतार लिया और मसलते हुए तोड़कर ज़मीन पर फेंक दिया।

इससे दुर्वासाजी को क्रोध आ गया और उन्होंने शाप देते हुए कहा – देवराज! तुम त्रिभुवन की राज्यलक्ष्मी से संपन्न होने के कारण मेरा अपमान करते हो। इसलिए तीनों लोकों की लक्ष्मी नष्ट हो जायेगी। इसमें तनिक भी संदेह नहीं हैं। दुर्वासा के इस प्रकार शाप देने पर इन्द्र पुनः अपने नगर को लौट गये। तत्पश्चात जगन्माता लक्ष्मी अन्तर्धान हो गयीं। ब्रह्मा आदि देवता, गन्धर्व, यक्ष, किन्नर, दैत्य, दानव, नाग, मनुष्य, राक्षस, पशु-पक्षी तथा कीट आदि जगत के समस्त चराचर प्राणी दरिद्रता के मारे दुःख भोगने लगे।

सब लोगों ने भूख-प्यास से पीडित होकर ब्रह्मा के पास जाकर कहा–भगवान! तीनों लोक भूख-प्यास से पीडित हैं। आप सब लोकों के स्वामी और रक्षक हो। हम आपकी शरण में आये हैं। देवेश आप हमारी रक्षा करें।

ब्रह्मा यह बात सुनकर बोले – देवता, दैत्य, गन्धर्व और मनुष्य आदि प्राणियों। सुनो। इन्द्र के अनाचार से ही यह सारा संकट उपस्थित हुआ है। दुर्वासाजी के क्रोध से आज तीनों लोकों का नाश हो रहा हैं। जिनकी कृपा-कटाक्ष से सब लोक सुखी होते हैं, वे जगन्माता महालक्ष्मी अन्तर्धान हो गयी हैं। इसलिए हम सब लोग चलकर क्षीरसागर में विराजमान सनातन देव भगवान – नारायण की आराधना करें। उनकें प्रसन्न होने पर ही संपूर्ण जगत का कल्याण होगा। ऐसा निश्चय करके ब्रह्मा, संपूर्ण देवताओं और भृगु आदि महर्षियों के साथ क्षीरसागर पर गये और विधिपूर्वक पुरुषसूक्त के द्वारा उनकी आराधना करने लगे। इससे प्रसन्न होकर भगवान ने सब देवताओं को दर्शन दिया। तब भगवान बोले – देवताओं! अत्रिकुमार दुर्वासा के शाप से भगवती लक्ष्मी अन्तर्धान हो गयी हैं। अतः तुम लोग मन्दराचल पर्वत को उखाडकर क्षीरसमुद्र में रखो और उसे मथानी बना नागराज वासुकि को रस्सी की जगह उसमें लपेट दो। फिर दैत्य, गन्धर्व और दानवों के साथ मिलकर समुद्र का मन्थन करो। इससे जगत की रक्षा के लिए लक्ष्मी प्रकट होगी। उनकी कृपा दृष्टि पडते ही तुम लोग महान सौभाग्यशाली हो जाओगे। मैं ही कूर्मरूप से मंदराचल को अपनी पीठ पर धारण करूँगा। तथा मैं ही संपूर्ण देवताओं में प्रवेश करके अपनी शक्ति से उन्हें बलिष्ठ बनाऊँगा। ऐसा कहकर भगवान वहाँ से अन्तर्धान हो गये।

तत्पश्चात संपूर्ण देवता और महाबली दानव आदि ने मन्दराचल को उखाड़ कर क्षीरसागर में डाला। इसी समय अमित पराक्रमी भगवान नारायण ने कछुए के रूप में प्रकट होकर उस पर्वत को अपनी पीठ पर धारण किया तथा एक हाथ से उस सर्वव्यापी अविनाशी प्रभु ने उसके शिखर को भी पकड रखा था। तदनंतर देवता और असुर मंदराचल पर्वत में नागराज वासुकि को लपेटकर क्षीरसागर का मन्थन करने लगे। जिस समय महाबली देवता लक्ष्मी को प्रकट करने के लिए क्षीरसागर को मथने लगे, उस समय संपूर्ण महर्षि उपवास करके मन और इन्द्रियों के संयमपूर्वक श्रीसूक्त और विष्णुसहस्त्रनाम का पाठ करने लगे। शुद्ध एकादशी तिथि को समुद्र मंथन आरंभ हुआ। उस समय लक्ष्मी के प्रादुर्भाव की अभिलाषा रखते हुए श्रेष्ठ ब्राह्मणों और मुनिवरों ने भगवान लक्ष्मीनारायण का ध्यान और पूजन किया।

उस समय सबने पहले कालकूट नामक महाभयंकर विष प्रकट हुआ, जो बहुत बडे पिण्ड के रूप में था। वह प्रलयकालीन अग्नि के समान अत्यंत भयंकर जान पड़ता था। उसे देखते ही संपूर्ण देवता और दानव भय से भाग गये। श्री शंकरने अपने हृदय में सर्वदुःखहारी भगवान नारायण का ध्यान किया और उनके तीन नामरूपी महामन्त्र का भक्ति पूर्वक जप करते हुए भयंकर विष को पी लिया। अच्युत, अनंत और गोविन्द – ये ही श्री हरि के तीन नाम हैं। ॐ अच्युताय नमः, ॐ अनन्ताय नमः तथा ॐ गोविन्दाय नमः, जो इन तीन नामों का एकाग्रचित्त होकर जप करता है, उसे काल और मृत्यु से भय नहीं होता।

फिर समुद्र-मंथन करने पर लक्ष्मीजी की बड़ी बहन दरिद्रा देवी प्रकट हुई। उन्होंने देवताओं से पूछा – मेरे लिए क्या आज्ञा हैं। तब देवताओं ने उनसे कहा – जिन के घर में प्रतिदिन कलह होता हो वहीं हम तुम्हें रहने के लिए स्थान देते हैं। तुम अमंगल को साथ लेकर उन्हीं घरों में जा बसो। जो सदा झूठ बोलते हो, जहाँ कठोर भाषण किया जाता हों उन्हीं के घर में दुःख और दरिद्रता प्रदान करती हुई तुम नित्य निवास करो।

दरिद्रा देवी को इस प्रकार आदेश देकर पुनः देवताओं ने क्षीरसागर का मंथन आरंभ किया। तब सुन्दर नेत्रोंवाली वारुणी देवी प्रकट हुई, जिसे नागराज अनंत ने ग्रहण किया। तदनंतर समस्त शुभलक्षणों से सुशोभित और सब प्रकार के आभूषणों से

विभूषित एक स्त्री प्रकट हुई, जिसे गरुड ने अपनी पत्नी बनाया। इसके बाद दिव्य अप्सराएँ और महातेजस्वी गन्धर्व उत्पन्न हुए जो अत्यंत रूपवान और सूर्य, चन्द्रमा के समान तेजस्वी थी। तत्पश्चात ऐरावत हाथी, उच्चैःश्रवा अश्व, धन्वंतरि वैद्य, पारिजात वृक्ष और संपूर्ण कामनाओं को पूर्ण करनेवाली सुरभि गौ का प्रादुर्भाव हुआ। इन सब को इन्द्र ने बड़ी प्रसन्नता के साथ ग्रहण किया।

द्वादशी के प्रातःकाल महालक्ष्मी प्रकट हुई। उन्हें देखकर देवताओं को बड़ा हर्ष हुआ। उसके बाद क्षीरसागर से शीतल एवं अमृतमयी किरणों से युक्त चन्द्रमा प्रकट हुए जो माता लक्ष्मी के भाई हैं। इसके बाद श्रीहरि की पत्नी तुलसीदेवी प्रकट हुई! जगन्माता तुलसी का प्रादुर्भाव श्री हरि की पूजा के लिए ही हुआ हैं। तत्पश्चात सब देवता प्रसन्न चित्त होकर मन्दराचल को यथास्थान रख आये और लक्ष्मी की स्तुति करने लगे। तब लक्ष्मी ने प्रसन्न होकर कहा – मुझसे तुम मनोवांछित वर माँगो।

देवता लोग बोले – विष्णु की प्रियतमा लक्ष्मीदेवी! आप हम लोगों पर प्रसन्न होकर श्री विष्णु के वक्षस्थल में निवास करें। कभी भगवान से अलग न हों तथा तीनों लोकों का कभी परित्याग न करें। तभी ब्रह्मा और भगवान नारायण प्रकट हुए। सभी देवता हाथ जोड़कर बोले – महारानी लक्ष्मी को जगत की रक्षा के लिए ग्रहण कीजिए। ऐसा कहकर ब्रह्मा आदि देवता ने दिव्य पीठ पर भगवान विष्णु और लक्ष्मी को बिठाकर उन दोनों की पूजन किया। क्षीरसागर से जो कोमल दलोंवाली तुलसीदेवी प्रकट हुई थी, उनके द्वारा उन्होंने भगवान नारायण के युगल चरणों की अर्चना की। इससे सर्वदेवेश्वर भगवान श्री हरि ने लक्ष्मीसहित प्रसन्न होकर देवताओं को मनोवांछित वरदान दिया। तब से देवता और मनुष्य आदि प्राणी बहुत प्रसन्न रहने लगे। उनके यहाँ धन-धान्य की प्रचुर वृद्धि हुई और वे निरोग होकर अत्यंत सुख का अनुभव करने लगे।

लक्ष्मीसहित भगवान विष्णु ने प्रसन्न होकर संपूर्ण लोकों के हित के लिए महामुनियों और देवताओं से कहा – एकादशी तिथि परम पुण्यमयी है। यह सब उपद्रवोंकों शांत करनेवाली है। तुम लोगों ने लक्ष्मी के दर्शन पाने के लिये इस तिथि को उपवास किया है, इसलिए यह द्वादशी तिथि मुझे सदा प्रिय होगी। आज से जो लोग एकादशी को उपवास करके द्वादशी को प्रातःकाल सूर्योदय होने पर बड़ी श्रद्धा के साथ लक्ष्मी और तुलसी के

साथ मेरी पूजा करेंगे, वे सब बंधनों से मुक्त होकर मेरे परम पद को प्राप्त होंगे।

ऐसा कहकर भगवान विष्णु मुनियों के द्वारा अपनी स्तुति सुनते हुए लक्ष्मीजी के निवास स्थान क्षीरसागर में चले गये। वहाँ शेषनाग की शय्या के ऊपर लक्ष्मी के साथ रहने लगे। तत्पश्चात सब देवता कच्छपरूपधारी सनातन भगवान का भक्तिपूर्वक पूजन करके प्रसन्नचित्त हो गये।

भगवान की आज्ञा मानकर ब्रह्मा आदि देवता, सिद्ध, मनुष्य, योगी तथा मुनिश्रेष्ठ बड़ी भक्ति के साथ एकादशी तिथि को उपवास और द्वादशी तिथि को भगवान का पूजन करने लगे।

एकादशी के महत्त्व के बारे में शास्त्र-प्रमाण

1. मन में भौतिक इच्छा रखनेवाले लोगों ने मोक्ष प्राप्त करने के लिए अथवा अपनी उद्देश्य-पूर्ति के लिए प्रत्येक एकादशी को उपवास रखना चाहिए। परंतु एकादशी का सच्चा उद्देश्य हैं भगवान को आनंद प्रदान करना।

2. शुक्ल पक्ष हो या कृष्ण पक्ष हो, भरणी नक्षत्र हो या अन्य कोई भी कारण हो, भगवान श्री हरि का प्रेम और उनके धाम की प्राप्ति करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति ने एकादशीके दिन उपवास रखना आवश्यक हैं।

3. काशी, गया, गंगा, नर्मदा, गोदावरी और कुरुक्षेत्र–इन में से कोई भी तीर्थ एकादशी की बराबरी नहीं कर सकते।

4. हज़ारों अश्वमेध यज्ञ करके और सैकडों वाजपेय यज्ञ करके जो पुण्य प्राप्त होता है, उस पुण्य की तुलना एकादशी के उपवास द्वारा प्राप्त होनेवाले पुण्य के सोलहवे हिस्से के साथ भी नहीं हो सकती।

5. इस पृथ्वी पर भगवान पद्मनाभ के दिन के समान (अर्थात् एकादशी के समान) शुद्धि प्रदान करनेवाला और पाप दूर कर सकने में समर्थ अन्य कोई भी दिन नही हैं।

6. हे प्रभु! ग्यारह इन्द्रियों के द्वारा (आँखें, कान, नाक, जीभ और त्वचा यह पाँच ज्ञानेंद्रिय; मुँह, हाथा, पैर, गुदद्वार और जननेंद्रिय यह पाँच कर्मेंद्रिय और मन – इन के द्वारा) किये गये सर्व पाप कर्म हर एक पक्ष की ग्यारहवे दिन को (एकादशी को) उपवास करने से नष्ट हो जाते हैं।

7. हे राजा! अपना पाप नष्ट करने के लिए एकादशी के समान प्रभावी उपाय दूसरा कोई नहीं हैं। यदि कोई व्यक्ति केवल दिखावे के लिए एकादशी करता है, तो भी उस व्यक्ति को मृत्यु के उपरांत यम का दर्शन नहीं होता हैं।

8. भगवान श्रीकृष्ण के अवतार महर्षि वेद व्यास ने कहा है–"मेरे दिन (एकादशी को) यदि कोई व्यक्ति मुझे थोड़ा भी अन्न अर्पण करता है, तो वह नरक में जायेगा। तो कोई व्यक्ति स्वयं अन्न खाने से उस की क्या गति होगी, ये कहने की आवश्यकता नहीं हैं।"

9. स्वमातृगमन, गोमांस भक्षण करना, ब्राह्मण की हत्या करना आणि शराब पीना – ये सब पाप एकादशी को अन्न खाने के पापों से क्षुद्र हैं।

10. जो मनुष्य एकादशी के पवित्र दिन अन्न खाता हैं तो वह सब मनुष्यों में हीन हैं। यदि कोई ऐसे मनुष्यों का अशुभ चेहरा देखता हैं, उसने सूर्य के तरफ़ देखकर अपने आप को पवित्र कर लेना चाहिए।

11. एकादशी के दिन (श्रीहरी के दिन) इस पृथ्वी के उपर की सब बडे बडे पाप जैसे ब्रह्म-हत्या (ब्राह्मण को मारने का पाप) अन्न का आश्रय लेते है आणि वहाँ रहते हैं।

12. यदि अपने पिता, पुत्र, पत्नी या मित्र भी भगवान पद्मनाभ के दिन यदि अन्न खायेंगे तो भी वे बडे पापियों में गिने जायेंगे।

13. दशमी के दिन एक ही बार खाना खायें। एकादशी के दिन पूर्ण उपवास रखना चाहिए। एकादशी के दिन श्राद्ध, तिलोदक, पिंड-प्रदान, जल-तर्पण इत्यादि कार्य नहीं करना चाहिए।

14. कोई भी महिला मासिक धर्म के समय भी (रजस्वला अवस्था में भी) एकादशी के दिन अन्न न खायें।

15. विधवा स्त्री यदि एकादशी के दिन अन्न भोजन करती हैं तो वह सब पुण्यों से रहित होती है आणि प्रति दिन एक गर्भपात करने का पाप उसे लगता हैं।

द्वादशी को तुलसी-पत्तों का चयन वर्जित

न छिन्द्यात् तुलसीं विप्र द्वादश्यां वैष्णवः क्वचित्।

(हरिभक्तिविलास, 7/354, विष्णु-धर्मोत्तर पुराण)

हे ब्राह्मणों, एक वैष्णव द्वादशी के दिन कभी भी तुलसी पत्तों का चयन नहीं करता।

भानुवारं विना दुर्वां तुलसीं द्वादशीं विना।
जिवितस्य अविनाशाय न विचिन्वित धर्मवित्॥

(हरिभक्तिविलास, 7/355, गरुड-पुराण)

शास्त्र का भली भाँति अध्ययन किया हुए व्यक्ति यदि अपनी आयु को कम नहीं करना चाहता हो तो उसे रविवार के दिन दुर्वा घास और द्वादशी के दिन तुलसी के पत्तों का चयन नहीं करना चाहिए।

द्वादश्यां तुलसी पत्रं धात्री पत्रश्च कार्त्तिके।
लुनति स नरो गच्छेत् निरयं अति गर्हितम् ॥

(हरिभक्तिविलास7/356, पद्म-पुराण, कृष्ण और सत्यभामा के बीच का संवाद)

यदि कोई मनुष्य द्वादशी के दिन तुलसी-पत्तों का चयन करता है या कार्तिक महीने में आंवले के वृक्ष के पत्तों का चयन करता है तो उसे अत्यंत गर्हित नरक-लोक की प्राप्ति होकर दुःख का अनुभव करना पड़ता है।

एकादशी के दिन केवल अनाज निषिद्ध हैं

गर्वीला और आभासी (छद्म) वैष्णव श्यामा चावल (वरइ का चावल), सूजी , चना आदि को अनाज न समझकर उनका एकादशी के दिन सेवन करते हैं। अनाज का अर्थ हैं 'अत्तुं योग्यं अन्नम्'। इस परिभाषा के अन्तर्गत सभी प्रकार के अनाजों का समावेश होता हैं। सच कहे तो भगवान हरी के दिन (अर्थात् एकादशी के दिन) अनाज से बना हुआ कोई भी व्यंजन स्वीकार करने योग्य नहीं हैं। फल, मूल, जल और दूध रूपी अनुकल्प लेने से उपवास नहीं टुटता है। यदि कोई पूरा भूखा रहने में असमर्थ है तो अनुकल्प स्वीकार करने की व्यवस्था है। शंकर आणि पार्वती के बीच हुआ संवाद पद्म-पुराण में द्रष्टव्य हैं –

अन्नन्तु धान्य - संभूतं गिरिजे यदि जायते।
धान्यानि विविधानीह जगत्यां श्रुणु यत्नतः॥
श्याम - मास - मसूराश्च धान्य - कोद्रव - सर्षपाः।
यव - गोधूम - मुद्गाश्च तिल - कंगु - कोलथकाः॥

गवेधुकाश्च निवारा आतकश्च कलायकाः।
माण्डुको वज्रको रंक कीचको बडकस्तथा।
तिलकश्चणकाद्यश्च धान्यानि कथितानीह॥

"हे गिरिजे (हिमालय पर्वत की कन्या), अनाज से उत्पन्न हुए व्यंजन 'अन्न' के नाम से जाने जाते हैं। इस जगत में अनेक प्रकार के अनाज हैं। उनकी सूची मैं आपको बताता हूँ - ध्यानपूर्वक सुनिए – श्यामा चावल (भगर या वरई), मसूर की दाल, धान्य, कोद्रव (कोद-धान, एक प्रकार का अनाज जो गरीब लोग खाते है), तिल, पंगू, कुलथ, गवेधुक (तुण-धान्य), आतक, मटर, मण्डुक, बाजरा, रल्क, कीचक (बास-धान्य), बरवटी, तिलक (होम अनाज), चना आदि। आदि शब्द के द्वारा ज्वारी और मक्का का बोध होता हैं। इसलिये श्यामा-चावल, गेहूँ का आटा, चना आदि व्यंजन अन्न में ही गिने जाते हैं आणि एकादशीके दिन खाने के लिए अयोग्य हैं।"

पुस्तक प्रकाशन के योगदान करनेवाले भक्तों के नाम

1. श्रीपाद् भक्तिवेदान्त विष्णुदैवत स्वामी, तिरूपति।
2. श्रीमती श्यामराणी दासी, वृंदावन।
3. श्रीमती बकुला दासी, वृंदावन।
4. श्रीमती जानकी दासी, वृंदावन।
5. श्रीमती यशोदा देवी दासी, मुंबई।
6. श्री. रामानुज प्रभु, रावणगाव।
7. श्रीमान् नितीन अतगुर, डोंबिवलि।
8. श्रीमती शरयु बनकर, मुंबई।
9. श्रीमान् शुकदेव बनकर, मुंबई।
10. श्रीमान् अमलकृष्ण दास, मुंबई।
11. श्रीमान् अमलकृष्ण दास, पुणे।

12. श्रीमान् मुकुन्द् दास, सातारा।
13. श्रीमान् राजाराम दास, रावणगाव।
14. श्रीमान् जमदग्नि दास, गाडेवाडी।
15. श्रीमान् हरि दास, गाडेवाडी।
16. श्रीमान् ब्रह्माहरि दास, दौंड.
17. श्रीमान् वैकुंठ दास, रावणगाव।
18. श्रीमान् विश्वनाथ दास, पुणे।
19. श्रीमान् पाडुरंग मेरगळ, रावणगाव।
20. श्रीमान् पाचपुते, बोरीबेल।
21. श्रीमान् ज्ञानेश्वर जगताप, गाडेवाडी।
22. श्रीमान् विजय आटोळे, रावणगाव।
23. श्रीमान् अंकुशराव येवले, गाडेवाडी।
24. श्रीमान् अजित लक्ष्मण मांडवे, पुणे ने अपने माता (श्रीमती अंजना लक्ष्मण मांडवे) और पिता (श्री. लक्ष्मण गणपति मांडवे) के पावन स्मृती में योगदान दिया।
25. श्रीमान् मनीष रामदास बागुल, पुणे ने अपने पिता (श्री. रामदास गंगाराम तेली) के स्मृती में योगदान दिया।
26. श्रीमान् मुकुन्दराज खोण्डे, औरंगाबाद्।
27. श्रीमान् परमानंद् दास, तहसील: सिन्धनुर, जिला: रायचूर।
28. श्रीमान् विनोद् अग्रवाल, नागपुर।
29. श्रीमान् परशुराम दास, सिन्धनुर।
30. श्रीमान् पाण्डे, वाशी।
31. श्रीमान् अमित कृष्ण दास, लखनऊ।
32. श्रीमान् अमित शर्मा, लखनऊ।
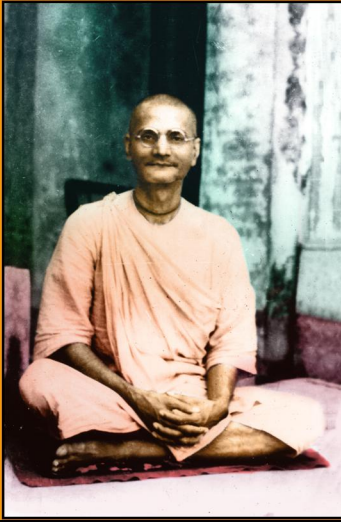
आचार्य-केशरी श्रील भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराज। आपने श्रील भक्तिवेदान्त स्वामी महाराज जी को संन्यास प्रदान किया। श्री कुरेश ने अपने प्राण को संकट में डालकर श्री रामानुजाचार्य के जीवन की रक्षा की थी। आपने भी अपने जान को खतरे में डालकर एक जानलेवा हमले से नवद्वीप धाम में श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर की रक्षा की थी। आपने ठाकुर भक्तिविनोद इन्स्टिट्युट को रविवार के बजाय एकादशी और पंचमी के दिन साप्ताहिक अवकाश प्रदान किया था। एकादशी माधव-तिथि है और पंचमी सरस्वती देवी और श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती प्रभुपाद की शुभ आविर्भाव तिथि है। आप प्रतिदिन तीन लाख हरिनाम का जप करते थे। आप कृपा करके सब को नाम-प्रेम और शुद्धा एकादशी के प्रति निष्ठा प्रदान करते है।
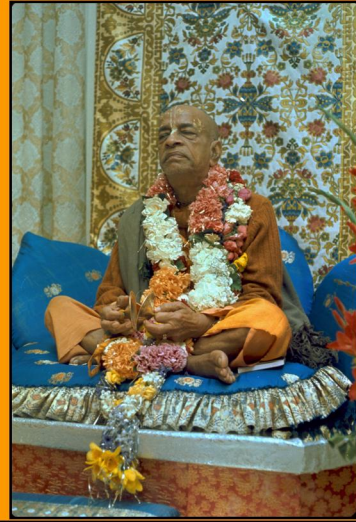
श्रील भक्तिवेदान्त स्वामी महाराज। आपने पाश्चात्य देशों में हरिनाम और एकादशी माहात्म्य का प्रचार किया। अपने तिरोभाव के पहले आपने श्रील भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराज को अपने शिष्यों को मदद करने का अनुरोध किया था। इस आज्ञा शिरोधार्य मानकर श्रील भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराज 'गुरुदेव' ने चालीस बार विश्व प्रदक्षिणा करते हुए श्रीगौरवाणीका प्रचार किया।
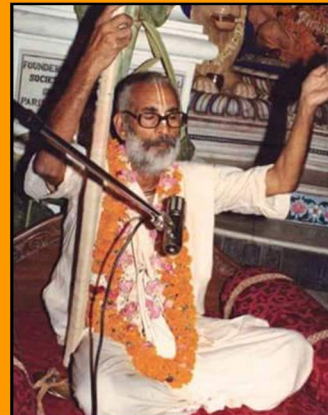
कोई भी अन्य तिथि एकादशी से श्रेष्ठ नहीं हैं

"श्रीकृष्ण के लिये एकादशी तिथि जन्माष्टमी से भी श्रेष्ठ है। परम करूणामय परमेश्वर श्रीकृष्ण स्वयं माधव तिथि अर्थात् एकादशी के स्वरूप में मूर्तिमान होकर इस जगत में विराजित हैं। अनन्त स्वरूपा विष्णुमयी शक्ति समस्त जीवों के लिये सभी प्रकार का मंगल विधान करने के उद्देश्य से परमशुभ एकादशी तिथि के रूप में प्रकटित हैं।"(युगाचार्य श्रील भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराज 'गुरुदेव')

विरोध होने से एकादशी उपवास का फल एक करोड गुना अधिक!

"यदि कोई व्यक्ति अन्यों के द्वारा हुआ विरोध सहकर भी यदि एकादशी के उपवास का व्रत रखता हैं तो उसे जिन को एकादशी का उपवास करने में कोई भी विरोध नहीं हुआ हैं उन लोगों की अपेक्षा उसे एक करोड गुना अधिक फल की प्राप्ति होती हैं। यदि कोई व्यक्ति अन्यों को एकादशी व्रत करने की प्रेरणा देकर उन्हें एकादशी का उपवास करने में प्रवृत्त करता हैं, तो उस व्यक्ति के बीते हुए कई जन्मों के पूर्व पापकर्म और आगामी जन्मों के भावी पापकर्म भी जल कर राख हो जाते हैं। एकादशी का प्रचार करने वाले व्यक्ति के समान कोई भी भगवान श्रीकृष्ण और श्रीशिवजी का प्रेमास्पद नहीं हों सकता हैं। एकादशी में अन्न भोजन करना स्व-मातृ गमन, गोमांस-भक्षण, सुरापान इत्यादि कार्योंसे भी अधिक निन्दनीय है।" (श्रीमन्मध्वाचार्य-विरचित दिव्य ग्रंथ 'श्रीकृष्णामृत-महार्णव' से उद्धृत)

श्री एकादशी व्रतोपवास का परलोकगत पिता को आध्यात्मिक लाभ

मुंबई के एक सज्जन के पिता गुजरने के बाद उनके सपने में आकर प्रायः उन्हें दर्शन दिया करते थे। किंतु वे देखते थे की उनके पिता दुखी है। उन्होंने मैले-कुचैले और फटे वस्त्र परिधान किए हुए है। वे उनके सपने में आकर उन्हें मदद करने के लिए कातर प्रार्थना करते थे। उन सज्जन ने श्रीपाद भक्तिवेदान्त दण्डी महाराज जी की प्रेरणा से एकादशी के दिन उपवास रखना आरंभ किया। उन्होंने अपने एक एकादशी का फल अपने पिता को समर्पण किया। चंद दिनों के बाद उन्हें अपने पिता का सपने में फिर दर्शन हुआ। इस समय उन्होंने देखा की उनके पिता अत्यन्त प्रसन्न हैं। उन्होंने सफेद धोती, सफेद कुर्ता और सफेद चादर ओढ़ी हुई हैं। उन्होंने भाल-प्रदेश में गोपिचन्दनका ऊर्ध्व-पुण्ड्र तिलक धारण किया हैं। उनके गले में तुलसी-काष्ठ की कण्ठिमाला हैं और हात में तुलसी की जप-माला हैं। उन्होंने आनंद के साथ अपने सुपुत्र को आशीर्वाद प्रदान करते हुए स्वयं को एकादशी की कृपा से सद्गति मिलने का शुभ समाचार दिया।